
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest
रश्मि
41 वाँ अंक
यात्रा संस्मरण विशेषांक
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय - महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
महाराष्ट्र, नागपुर

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान ; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा– हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

❐❐❐

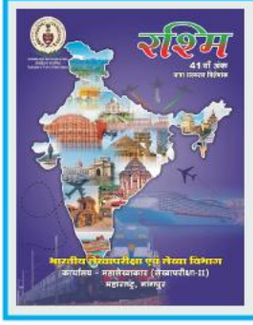

पत्रिका के मुखपृष्ठ पर भारत के विभिन्न पर्यटन स्थलों के छायाचित्रों तथा जल, थल एवं वायुमार्ग के यातायात के साधनों को प्रदर्शित किया गया है।

रश्मि

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)
महाराष्ट्र, नागपुर

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

भाषा चंदन की उस सुगंध के समान है, जो हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना की जीवंत धारा बन जाती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हमारी भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ हमारी सभ्यता की स्मृति, लोकजीवन की संवेदना और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। स्वभाषा व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ती है और उसे आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों, अनुभवों और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने की शक्ति देती है।

हमारा भारत भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि की अनुपम भूमि है। यहाँ प्रत्येक भाषा अपने साथ एक इतिहास, लोकपरंपरा और जीवन–दृष्टि लेकर चलती है। यही भाषाई बहुलता भारत की 'विविधता में एकता' की भावना को सशक्त बनाती है। हिंदी ने इसी विविधता के बीच संवाद, संपर्क और समन्वय की भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों और समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी का विकास भी तभी सार्थक है, जब वह सभी भारतीय भाषाओं के सम्मान, संरक्षण और संवर्धन के साथ आगे बढ़े। हिंदी किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच आत्मीय संवाद और राष्ट्रीय एकात्मता की महत्वपूर्ण कड़ी है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने भाषा की वास्तविक शक्ति को जनता के जीवन और उसके सहज प्रयोग से जोड़ा था। उनका यह भाव हमें स्मरण कराता है कि कोई भी भाषा तभी जीवंत बनती है, जब वह समाज के सामान्य जन के श्रम, संवेदना, आकांक्षा और आत्मविश्वास की भाषा बने। हिंदी की शक्ति भी इसी लोक–संपर्क, सरलता, सहजता और व्यापक स्वीकार्यता में निहित है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा** के विचारों ने राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने यह अनुभव किया था कि स्वभाषा और स्वाभिमान के बिना स्वराज की संकल्पना अधूरी रहेगी। हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं ने जन–जागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के विचार को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी ने देश के अनेक हिस्सों में स्वतंत्रता आंदोलन के विचारों, संदेशों और संकल्पों को सामान्य जन तक पहुँचाने की सशक्त संपर्क भाषा के रूप में कार्य किया।

यह वर्ष राष्ट्रीय गीत **'वंदे मातरम' के 150 वर्षों के स्मरण** का भी विशेष अवसर है। आज जब देश **'विकसित भारत@2047'** के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब 'वंदे मातरम' का भाव हमें यह प्रेरणा देता है कि विकास की यात्रा अपनी विरासत, अपनी भाषाओं, अपनी स्वभाषा और अपने सांस्कृतिक आत्मविश्वास के साथ ही सार्थक होती है।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक यात्रा का महत्वपूर्ण क्षण था। यह निर्णय **शासन को जनसामान्य के अधिक निकट** लाने, **लोक–संवाद को सशक्त** करने और **भारतीय भाषाओं के प्रति राष्ट्रीय सम्मान को अभिव्यक्त** करने का प्रतीक था। हिंदी दिवस हमें इसी ऐतिहासिक संकल्प का स्मरण कराता है और राजभाषा हिंदी को जनसेवा, सुशासन और राष्ट्रीय संवाद का प्रभावी माध्यम बनाने की प्रेरणा देता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अमृतकाल का वर्तमान दौर भारत की सांस्कृतिक विरासत, सभ्यतागत आत्मविश्वास और आधुनिक प्रगति के अद्भुत समन्वय का कालखंड है। प्रधानमंत्री जी का **'विकास भी, विरासत भी'** का मंत्र हमें यह दिशा देता है कि आधुनिक भारत का निर्माण अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए ही सशक्त रूप से किया जा सकता है। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का अर्थ यह भी है कि हम अपनी भाषाओं में सोचने, काम करने, सृजन करने और विश्व से संवाद करने का आत्मविश्वास विकसित करें। **इस दिशा में राजभाषा हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।**

इसी दृष्टि से राजभाषा विभाग द्वारा तकनीकी और संस्थागत स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित 'भारती'; भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को सहज बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है। वर्ष 2024 में स्थापित **'भारतीय भाषा अनुभाग'** केंद्र और राज्यों के बीच पत्राचार तथा प्रशासनिक संवाद को भारतीय भाषाओं में अधिक सुगम बना रहा है। इसी प्रकार, 8.27 लाख से अधिक प्रविष्टियों वाला **'हिंदी शब्द सिंधु'** डिजिटल शब्दकोश हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की शब्द–संपदा को जोड़ते हुए ज्ञान–साझाकरण का समृद्ध माध्यम बन रहा है। ये पहलें हिंदी को तकनीक, प्रशासन और ज्ञान–विनिमय की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बना रही हैं।

हिंदी दिवस केवल भाषा के प्रति गौरव व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि स्वभाषा में अपना कार्य, चिंतन और सृजन करने के लिए संकल्पित होने तथा संविधान–निर्माताओं के प्रति कृतज्ञ श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी है। आइए, इस पावन अवसर पर हम हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं को विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाने का संकल्प लें।

आप सभी को पुनः हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2026

(अमित शाह)

रश्मि परिवार

• मुख्य संरक्षक •

श्री दत्तप्रसाद शिरसाट

महालेखाकार

• संरक्षक •

श्री नितीन गंगाधर पुके

उप महालेखाकार (प्रशासन)

• संपादक •

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी

सहायक निदेशक (राजभाषा)

• सह-संपादक •

श्री. राजेश कुमार कटरे

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सुश्री. नयना कुमारी इस्सर

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सुश्री. यशी श्रीवास्तव

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अस्वीकरण : पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, उनसे कार्यालय / संपादक मंडल अथवा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। उनसे उत्पन्न किसी भी वाद की जिम्मेदारी रश्मि परिवार अस्वीकार करता है।



महालेखाकार का संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष है कि हिंदी दिवस 2026 के इस शुभ अवसर पर हमारी हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' का 41वाँ अंक 'यात्रा विशेषांक' के रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी केवल सरकारी कामकाज की भाषा नहीं है, बल्कि यह हमारे देश की चेतना व संस्कृति का प्रतीक भी है।

हमारा कार्यालय राजभाषा नीति के अनुपालन और दैनिक प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। यह काफी सराहनीय है कि कार्यालय के अधिकारी और कर्मचारी न केवल अपने विभागीय दायित्वों का हिंदी में कुशलतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं, बल्कि इस पत्रिका के माध्यम से अपनी साहित्यिक रुचियों और वैचारिक प्रतिभा को भी प्रदर्शित कर रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक आप सभी को नई यात्राओं के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे जुड़ाव को और अधिक सशक्त करेगा। इस अंक के संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। 'रश्मि' पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति तथा कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी के सुगम प्रयोग हेतु मेरी सहृदय शुभकामनाएँ।

दत्तप्रसाद शिरसाट

दत्तप्रसाद शिरसाट
महालेखाकार



उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश

कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के नवीनतम अंक का प्रकाशन हर्ष और संतोष का विषय है। ऐसी पत्रिकाएँ न केवल राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को गति प्रदान करती हैं, बल्कि कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा और साहित्यिक अभिरुचि को अभिव्यक्ति का सार्थक मंच भी प्रदान करती हैं।

मुझे विश्वास है कि 'रश्मि' का यह 'यात्रा विशेषांक' विविध विषयों पर प्रकाशित रचनाओं के माध्यम से पाठकों को ज्ञान, संवेदना और सृजनशीलता से समृद्ध करेगा तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के सहज और प्रभावी प्रयोग के लिए प्रेरित करेगा।

इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक-मंडल, रचनाकारों एवं राजभाषा अनुभाग को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आशा है कि 'रश्मि' पत्रिका भविष्य में भी अपनी साहित्यिक गरिमा और राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता को बनाए रखते हुए निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करेगी। शुभकामनाओं सहित।

नितीन गंगाधर पुके
उप महालेखाकार (प्रशासन)



संपादकीय ...

यात्रा केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना नहीं, बल्कि नए अनुभवों, संस्कृतियों, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं से साक्षात्कार का माध्यम है। यात्रा के दौरान देखे-सुने और अनुभव किए गए क्षण जब स्मृतियों में बस जाते हैं और शब्दों का रूप लेते हैं, तो वे यात्रा-संस्मरण बनकर जीवन की अमूल्य निधि हो जाते हैं।

भारत की विविधता को समझने का सबसे सहज माध्यम यात्रा है। विभिन्न प्रदेशों की भाषा, संस्कृति, लोक-जीवन, खान-पान, कला और परंपराएँ हमें 'विविधता में निहित एकता' का बोध कराती हैं। यात्राएँ हमारी दृष्टि को व्यापक बनाती हैं, पूर्वाग्रहों को दूर करती हैं और हमें अधिक संवेदनशील मनुष्य बनने की प्रेरणा देती हैं। 'रश्मि' का 41वाँ अंक 'यात्रा-संस्मरण विशेषांक' के रूप में इसी यात्रा-भावना को समर्पित है। इस अंक में संकलित संस्मरणों के माध्यम से पाठक न केवल विभिन्न स्थानों की आभासी यात्रा करेंगे, बल्कि लेखकों के अनुभवों, अनुभूतियों और स्मृतियों से भी जुड़ेंगे।

हमारा प्रयास है कि 'रश्मि' पत्रिका कार्यालयीन दायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा और साहित्यिक संवेदना को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती रहे। आशा है कि यह विशेषांक पाठकों को न केवल नए स्थानों को जानने, बल्कि उन्हें एक नई दृष्टि से समझने और अनुभव करने की प्रेरणा भी देगा।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ और आशा करती हूँ कि 'रश्मि' पत्रिका इसी प्रकार पाठकों के हृदय में अपना विशेष स्थान बनाए रखेगी।

प्रियंका बी. गोस्वामी

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी

सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख / कविता		पृष्ठ क्र.
1.	अवकाश यात्रा रियायत	श्री मंगेश टोंगो	1
2.	मेरी अविस्मरणीय रेल यात्रा	श्री सुदिव्य रंजन	4
3.	मुंबई प्रशिक्षणः यादों का एक खूबसूरत सफ़र	सुश्री यशी श्रीवास्तव	8
4.	मेरी केदारनाथ यात्रा और आखिरी ज्योतिर्लिंग के दर्शन	श्री अनुराग पाठक	11
5.	सफर जो याद बन गया	श्री विपिन	14
6.	दिघोरी, पायली द्वीप एवं अमोदा गढ़ की यात्रा	श्री राजेश कुमार कटरे	17
7.	सैंच्युरी ऑफ ट्रूथ	श्रीमती रिंकू सिन्हा	20
8.	भारत भ्रमण वर्ग पहेली भारत भ्रमण सुडोकू पहेली	श्रीमती नीरजा टंडन	21
9.	परली बैजनाथ यात्रा	श्रीमती बेबीनंदा आर. ठाकुर	23
10.	मेरी बनारस यात्रा	श्री घनश्याम	24
11.	काशी विश्वनाथ मंदिर की यात्रा और मेरा अनुभव	सुश्री प्रियंका कुमारी	26
12.	नागपुर से दौसा की यात्रा - एक अविस्मरणीय अनुभव	सुश्री नारंगी मीणा	28
13.	मेरी माँ वैष्णो देवी यात्रा	श्रीमती शिवानी सक्सेना	33
14.	सबमरीन म्यूज़ियम	श्रीमती नीना वर्मा	36
15.	यात्रा	श्री संदीप बुटोलिया	37
16.	मानसून की हरियाली के बीच मुनार - प्रकृति की गोद में बिताए अविस्मरणीय पल	सुश्री भूमिका प्रसाद	38
17.	प्रशासनिक शब्दावली		41
18.	उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का दौरा		43
19.	विद्यार्थियों का सत्कार समारोह / स्वास्थ्य शिविर		44
20.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक		45
21.	हिंदी कार्यशाला		46
22.	हिंदी प्रोत्साहन योजना / पारंगत प्रशिक्षण		47
23.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम		48
24.	आपके पत्र		50





अवकाश यात्रा रियायत

श्री मंगेश टोंगो
व.ले.प.अ.

लीव ट्रैवल कंसेशन (एल.टी.सी.) यानी अवकाश यात्रा रियायत योजना सरकारी कर्मचारियों को चार साल की अवधि के दौरान अपने गृह नगर या भारत में किसी भी स्थान की यात्रा करने के लिए दी जाने वाली रियायती यात्रा सुविधा है। योजना के प्रावधानों के अनुसार, सरकारी कर्मचारियों के पास दो साल की अवधि में दो बार गृह नगर एलटीसी का लाभ उठाने या दो साल की अवधि में एक बार गृह नगर जाने और दूसरे दो साल की अवधि में भारत में किसी भी स्थान की यात्रा करने का विकल्प है। वर्तमान चार साल की अवधि 2026-2029 है, जिसमें दो साल की अवधि 2026-2027 और 2028-2029 शामिल हैं। कर्मचारियों और उनके पात्र परिवार के सदस्यों के यात्रा खर्च सरकार द्वारा वहन किए जाते हैं। लीव ट्रैवल कंसेशन का लाभ उठाते हुए, एक सरकारी कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य उस अवधि के दौरान अलग-अलग समय पर अलग-अलग समूहों में यात्रा कर सकते हैं। इसके अलावा, एनी प्लेस इन इंडिया एलटीसी का लाभ उठाते हुए, वे अपनी पसंद के विभिन्न स्थानों की यात्रा कर सकते हैं।

मैं 1993 से इस कार्यालय में कार्यरत हूँ। अपने 33 वर्ष के सेवाकाल में मैंने अपने परिवार के साथ आठ बार इस सुविधा का लाभ उठाया है। इस तरह मैंने चार साल की अवधि के, भारत में किसी भी स्थान की यात्रा करने के लिए दी जाने वाली रियायती यात्रा सुविधा का एक भी अवसर गवाया नहीं।

इस सुविधा के तहत मेरी पहली यात्रा दिसंबर 1998 में गोवा के लिए हुई। यह हमेशा देश विदेश के पर्यटकों से भरा रहता है। खास कर दिसंबर में, जब यहाँ का वातावरण खुशनुमा होता है तथा इसी माह में यहाँ गोवा कार्निवल भी होता है। यहाँ एक एक दिन की, उत्तर गोवा और दक्षिण गोवा की संचालित यात्रा, टूर गाइड के साथ करना बेहतर है। उत्तर गोवा में ज्यादातर समुद्र तट का सफर होता है, जिसमें कलंगुट, बागा, वेगातुर और अंजुना बीच दिखाया जाता है। दक्षिण गोवा में मिरामार बीच, अगवादा किला, बौम जीसस बासिलिका चर्च, मंगेशी मंदिर, शांतादुर्गा मंदिर आदि दिखाया जाता है। शाम के समय मांडवी नदी में क्रुज़ का सफर आनंददायी होता है। यहाँ गोवा के पारंपरिक नृत्य तथा कैसीनो का आनंद लिया जा सकता है। सूर्यास्त का मनोरम दृश्य भी क्रुज़ से अच्छा दिखाई देता है। यहाँ से आसपास दूधसागर जलप्रपात है जो की बहुत ही खूबसूरत है।

मेरी दूसरी यात्रा मार्च 1999 में नैनीताल के लिए हुई। नैनीताल को झील की रानी कहा



जाता है। यहाँ जाने के लिए, नागपुर से दिल्ली और दिल्ली से काठगोदाम तक हम रेल से गए तथा काठगोदाम से नैनीताल बस में गए। नैनीताल शहर के मध्य खूबसूरत नैनी झील है तथा इर्दगिर्द नौकुचिया ताल, भीमताल, सातताल आदि झीले हैं। नैनी झील में नौकाविहार करते हुए शहर तथा आसपास की पहाड़ियों का सौंदर्य देखा जा सकता है। यहाँ से रोप-वे लेकर स्नो व्यू पॉइंट पर जाकर बर्फ से ढके पहाड़ियों का नजारा बड़ा ही खूबसूरत दिखता है। नैनीताल से रानीखेत, कौसानी, अल्मोड़ा आदि जगहों का सफर भी प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है।

मेरी तीसरी यात्रा अक्तूबर 2006 में इलाहाबाद (प्रयागराज) के लिए हुई। यहाँ तीन नदियों का संगम है जिसे त्रिवेणी संगम के नाम से जाना जाता है। यह तीन नदियाँ हैं, गंगा, यमुना और सरस्वती जो की विलुप्त रूप में हैं। इस संगम स्नान का विशेष महत्व है क्योंकि इसे हिंदू आस्था के अनुसार पवित्र माना जाता है। स्नान के लिए नाव से संगम के मध्य तक जाना होता है। संगम के तट पर ही एक पुरातन किला है। साथ ही यहाँ बड़े हनुमान जी का मंदिर है, जहाँ की मूर्ति विशाल और लेटे अवस्था में है। इलाहाबाद में आनंद भवन नामक वस्तु संग्रहालय है, जो देखने लायक है। यह भवन इतिहास में पूर्व प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू का पारिवारिक निवास स्थान रहा है।

मेरी चौथी यात्रा जून 2010 में शिमला के लिए हुई। यहाँ पहुँचने के लिए नागपुर से दिल्ली और दिल्ली से काल्का की यात्रा हमने रेल द्वारा की। काल्का से शिमला का लुभावना सफर हमने टोय ट्रेन से तय किया। इस दौरान ट्रेन कई सुरंगों से गुजरते हुए अपना सफर तय करती है और हमें पहाड़ों के प्रकृतिक सौन्दर्य का आनंद देती है। शिमला में केंद्र सरकार द्वारा चलित द ग्रांड होटल में हमने कमरा आरक्षित कर लिया था। केंद्र सरकारी कर्मचारियों को इस होटल में रियायती दरों में रहने की बहुत ही अच्छी सुविधा है। शिमला शहर के प्रमुख आकर्षण मॉल रोड के नजदीक ही यह होटल स्थित है। शिमला शहर में तथा आसपास, रिज, क्राइस्ट चर्च, जाखू हनुमान मंदिर, कुफ़री, माशोब्रा, लक्कड़ बाजार, इत्यादि देखने योग्य है।

मेरी पाँचवीं यात्रा दिसंबर 2012 में मैसूर के लिए हुई। मैं पहली बार एलटीसी में हवाई यात्रा करने हेतु पात्र हुआ। हमने नागपुर से बेंगलौर की यात्रा हवाई जहाज से की और आगे मैसूर तक का सफर रेल से तय किया। मैसूर में वडियार राजा का भव्य एवं ऐतिहासिक महल है। हर साल दशहरा में इसे बड़ी ही खूबसूरती से सजाया जाता है। यहाँ बहुत सारी पुरातन वस्तुएँ संग्रहित की गई हैं। चामुंडी हिल्स पर माँ चामुंडेश्वरी मंदिर स्थित है। यहाँ से मैसूर शहर का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। शहर के पास कावेरी नदी पर स्थित कृष्णराज सागर बांध के पास वृंदावन गार्डन शाम के समय देखना एक अविस्मरणीय अनुभव है। यहाँ के रंगीन फव्वारों का दृश्य अत्यधिक विलोभनीय



होता है। मैसूर के पास ही श्रीरंगपट्टनम स्थित है। यहाँ श्री रंगनाथ स्वामी मंदिर और टीपू सुल्तान किला देखने योग्य है।

मेरी छठी यात्रा मई 2018 में मसूरी के लिए हुई। हम नागपुर से दिल्ली हवाई जहाज से गए। कुछ देर बाद दिल्ली से देहरादून तक का सफर एक छोटे हवाई जहाज से हुआ। देहरादून से मसूरी सड़क यात्रा थी, जो की घाट से गुजरती हुई बेहद आनंददायी थी। मसूरी पहुँचते ही मई महीने की गर्मी से छुटकारा मिला। मसूरी में पहले से ही ऑनलाइन होटल बुक कर लिया था। यहाँ हमने दो दिन तक निवास किया। इस दौरान मॉल रोड, कैमेल बैक रोड, गन हिल, केंप्टी फ़ॉल्स, लाल तिब्बा, चार दुकान, कंपनी बाग, आदि स्थान का आनंद लिया। लाल तिब्बा काफी ऊंचाई पर है। यहाँ से दूरबीन द्वारा बर्फीली पहाड़ों की चोटियाँ देखी जा सकती हैं। चार दुकान नामक उस जगह पर काफी शांति का अनुभव होता है।

मेरी सातवीं यात्रा सितंबर 2022 में मेंगलोर के लिए हुई। नागपुर से मुंबई और आगे मेंगलोर तक हवाई जहाज से यात्रा की। हवाई अड्डे से हम सीधे शृंगेरी के लिए रवाना हुए। शृंगेरी एक धार्मिक स्थल है जहां अति प्राचीन श्री विद्याशंकर एवं श्री शारदामबा मंदिर स्थित है। यहाँ शृंगेरी पीठ के श्री शंकराचार्य का निवास स्थान भी है। यहां से हम उडुपी गए। यहाँ श्रीकृष्ण मंदिर है जहां एक खिड़की से भगवान का दर्शन होता है। उडुपी शहर के पास ही साफ़ सुथरा मालपे बीच है। कुछ देर तक समुद्र की लहरों का आनंद लेकर हम मेंगलोर के लिए रवाना हुए। दक्षिण पश्चिम कर्नाटक के समुद्रतट पर बसा यह शहर, अनेक खूबसूरत बीच और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ तन्निर्भावि, सुल्तान बट्टेरी, पन्नाम्बूर, सोमेश्वर आदि बीच तथा मंगलदेवी, कुदरोली गोकर्णनाथ, काद्री मंजुनाथ आदि मंदिर प्रसिद्ध हैं।

मेरी आठवीं यात्रा अगस्त 2025 में बेंगलोर के लिए हुई। नागपुर से बेंगलोर हम सीधे हवाई जहाज से गए। यहाँ हमने तारामंडल, विश्वेश्वरैया म्यूज़ियम, लालबाग, मॉडर्न आर्ट गॅलेरी, इस्कॉन मंदिर, कब्बन पार्क, आदि जगह देखे। शहर से थोड़ी ही दूरी पर बनेरघट्टा पार्क है, जहां जंगली जानवर खुले रहते है और यहाँ हमें बस में बिठाकर घुमाते हैं। यहां से दो दिन के लिए हम आंध्र प्रदेश में तिरुमला स्थित श्री बालाजी और तिरुवन्नामलाई, तमिलनाडू में स्थित श्री अरुणाचलेश्वर मंदिर के दर्शन कर बेंगलोर लौट गए।

मेरे सेवानिवृत्त होने से पहले रियायती यात्रा सुविधा का और एक अवसर मुझे मिलेगा और निश्चित ही मैं उसका लाभ उठाऊंगा। मेरा यह मानना है कि हर एक केंद्र सरकार के अधिकारी तथा कर्मचारी को इस सुविधा का एक भी अवसर गवाना नहीं चाहिए। इससे हमें और हमारे परिवार को भारत के विभिन्न प्रदेशों की जानकारी मिलती है।

❑❑❑





मेरी अविस्मरणीय रेल यात्रा

श्री सुदिव्य रंजन
स.ले.प.अ.

कहते हैं, सफर सिर्फ एक जगह से दूसरी जगह पहुँचने का नाम नहीं होता। असली सफर तो उन यादों का नाम है, जो रास्ते में हमारे साथ चलती हैं। अगर कोई यात्रा बिल्कुल सामान्य तरीके से पूरी हो जाए, तो शायद वह कुछ दिनों बाद याद भी न रहे। लेकिन जब उसी यात्रा में थोड़ी भागदौड़, कुछ परेशानियाँ, थोड़ी घबराहट और कुछ अनपेक्षित घटनाएँ जुड़ जाएँ, तो वही साधारण सफर एक अविस्मरणीय यात्रा बन जाता है।

हमारी भी एक ऐसी ही ट्रेन यात्रा थी--- परिवार और बच्चों के साथ। हमने सोचा था कि सफर आराम से कटेगा, ट्रेन में बैठेंगे, सामान व्यवस्थित करेंगे, थोड़ा आराम करेंगे और फिर सुबह अपने गंतव्य पर उतर जाएँगे। लेकिन हमें क्या पता था कि इस सफर में रास्ते से ज्यादा दिलचस्प हमारी अपनी कहानी होने वाली है। तो चलिए, आपको सुनाते हैं हमारी उसी यादगार ट्रेन यात्रा की पूरी कहानी।

यात्रा करना हमेशा से मुझे पसंद रहा है, लेकिन कुछ यात्राएँ ऐसी होती हैं, जो जीवनभर याद रहती हैं। नागपुर से कोलकाता, पश्चिम बंगाल की मेरी यह रेल यात्रा भी ऐसी ही एक अविस्मरणीय यात्रा बन गई। यह यात्रा गीतांजलि एक्सप्रेस से हुई--- वही ट्रेन, जिसमें हमारी यह पूरी घटना घटी।

यात्रा की शुरुआत

बारिश का मौसम था। हमें परिवार के साथ गीतांजलि एक्सप्रेस से यात्रा करनी थी। समय पर स्टेशन पहुँचने के लिए मैंने घर से लगभग 45 मिनट पहले ओला कैब बुक की। लेकिन शायद किस्मत उस दिन हमारी परीक्षा लेना चाहती थी। पहला ड्राइवर काफी देर तक नहीं आया। मैंने उसे फोन किया, तो उसने बिना कुछ बताए राइड कैंसिल कर दी। मैंने तुरंत दूसरी ओला बुक की, लेकिन कुछ ही देर बाद उसने भी राइड कैंसिल कर दी।

अब ट्रेन छूटने में केवल 15 मिनट बाकी थे। हालांकि राहत की बात यह थी कि ट्रेन लगभग 10 मिनट देरी से चल रही थी। इसलिए हमें उम्मीद थी कि शायद हम समय पर स्टेशन पहुँच जाएँगे। मैंने तुरंत अपने एक मित्र को फोन किया। वह पाँच मिनट के भीतर अपनी गाड़ी लेकर मेरे घर पहुँच गया। हम सभी जल्दी-जल्दी गाड़ी में बैठे और स्टेशन की ओर निकल पड़े।

स्टेशन पहुँचने की जद्दोजहद

सदर के पास स्टेशन जाने के लिए दो रास्ते थे--- एक पुल के ऊपर से और दूसरा नीचे से। मैंने सोचा कि ऊपर वाले रास्ते पर ट्रैफिक कम होगा और हम जल्दी पहुँच जाएँगे।



लेकिन जैसे ही हम पुल से नीचे उतरने वाले थे, वहाँ भारी ट्रैफिक जाम मिल गया। लगभग पाँच मिनट वहीं निकल गए। मैं लगातार ट्रेन का रनिंग स्टेटस चेक कर रहा था। अब ट्रेन भी लगभग स्टेशन पहुँच चुकी थी। ट्रेन आने में केवल सात मिनट शेष थे और हमारी चिंता लगातार बढ़ती जा रही थी।

किसी तरह हम स्टेशन पहुँचे। ट्रेन प्लेटफॉर्म नंबर 3 से रवाना होने वाली थी। मैंने अपने मित्र से कहा कि वह मुख्य गेट के पास थोड़ा रुके, मैं डिस्प्ले बोर्ड देखकर प्लेटफॉर्म की पुष्टि कर लेता हूँ। डिस्प्ले बोर्ड पर देखा कि ट्रेन प्लेटफॉर्म नंबर 3 पर थी। मैंने मित्र से कहा कि आगे चलती सीढ़ियाँ हैं, हमें वहीं उतार दें। उसने बिना देर किए हमें वहाँ उतार दिया और वापस चला गया। समय की इतनी कमी थी कि उससे ठीक से कुछ कहने का भी मौका नहीं मिला।

अब मैं अपनी पत्नी, दोनों बच्चों और सामान के साथ चलती सीढ़ियों से तेजी से फुटओवर ब्रिज की ओर बढ़ा। वहाँ पहुँचते ही हमने दौड़ना शुरू कर दिया।

छूटती हुई ट्रेन और आखिरी उम्मीद

जब हम फुटओवर ब्रिज पर दौड़ रहे थे, तभी ट्रेन धीरे-धीरे प्लेटफॉर्म से बाहर निकलने लगी। हम पूरी तेजी से उसी प्लेटफॉर्म की ओर भाग रहे थे। मेरी पत्नी और बड़ी बेटी कुछ सामान के साथ आगे चल रही थीं। जब वे फुटओवर ब्रिज से नीचे उतर रही थीं, तब उन्हें ट्रेन के आखिरी कोच का कुछ हिस्सा दिखाई दिया। उस समय लगभग सभी ने उम्मीद छोड़ दी थी। लेकिन मेरी पत्नी ने हिम्मत नहीं छोड़ी। उसने काफी तेज आवाज में गार्ड को आवाज लगाई और ट्रेन रोकने का अनुरोध किया।

तब तक मैं भी छोटी बेटी और कुछ सामान के साथ नीचे उतर चुका था। हम सभी बुरी तरह थक चुके थे। ऐसा लग रहा था कि इतनी सारी भागदौड़ के बाद भी ट्रेन हमारे हाथ से निकल जाएगी। गार्ड ने पहले तो हमारी ओर ध्यान नहीं दिया। लेकिन पता नहीं उनके मन में क्या आया। शायद उन्होंने हमारी परेशानी और बच्चों को देखकर हमारी स्थिति समझी। उन्होंने कुछ दूर आगे जाकर ट्रेन रुकवा दी।

लेकिन ट्रेन रुकने के बाद भी हमारे सामने एक और मुश्किल थी--- हम गार्ड के डिब्बे तक कैसे पहुँचें?

हममें अब दौड़ने की भी ताकत नहीं बची थी।

उसी समय प्लेटफॉर्म पर मौजूद दो सरदार जी हमारी मदद के लिए आगे आए। उन्होंने कहा,

''आप पत्नी और बच्चों को लेकर जल्दी-जल्दी भागिए। मैं आपका सामान लेकर आता हूँ।''

उनकी बात सुनकर हमें जैसे नई ऊर्जा मिल गई। हम पूरी ताकत से दौड़े और किसी तरह गार्ड के डिब्बे तक पहुँच गए। साँसें तेज



चल रही थीं, शरीर थक चुका था, लेकिन मन में सिर्फ एक खुशी थी--- ट्रेन मिल गई थी!

गार्ड ने हमें अपने डिब्बे में बैठा लिया। कुछ ही देर में वे दोनों सरदार जी हमारा सामान लेकर वहाँ पहुँच गए। हमने उनका दिल से शुक्रिया अदा किया। कुछ ही क्षण बाद ट्रेन फिर चल पड़ी। उस समय हमें लगा कि अब हमारी सबसे बड़ी परेशानी खत्म हो गई है। लेकिन कहानी अभी बाकी थी।

गार्ड के डिब्बे में एक और परेशानी

थोड़ी देर बाद जब हमारी थकान कुछ कम हुई, तो मैंने अपने मित्र को यह बताने के लिए मोबाइल निकाला कि हमने ट्रेन पकड़ ली है। गार्ड को लगा कि मैं मोबाइल में व्यस्त हो गया हूँ। वे नाराज़ हो गए और बोले, ''भलाई भी करो और नौकरी से भी हाथ धो बैठो!'' उनका कहना था कि हमें एक तरफ बैठना चाहिए और लाइट नहीं जलानी चाहिए, क्योंकि गार्ड के डिब्बे में यात्रियों का इस तरह बैठना उचित नहीं था।

उन्होंने कहा कि वे ट्रेन रोक देंगे और हमें दूसरे कोच में चले जाना चाहिए। मैंने उन्हें समझाया कि मैं केवल अपने मित्र को यह बताने के लिए एक छोटा-सा संदेश भेज रहा हूँ कि हम ट्रेन में चढ़ गए हैं। मैंने कॉल करने के बजाय तुरंत एक छोटा-सा मैसेज भेज दिया और मोबाइल रख दिया। बाद में जब हम परिवार के साथ धीरे-धीरे बातें करने लगे, तो गार्ड फिर नाराज़ हुए। उन्होंने कहा कि अगले स्टेशन पर उतरकर अपने आरक्षित डिब्बे में चले जाएँ। हमने विनम्रता से उनकी बात मान ली।

अपने आरक्षित कोच तक पहुँचने की नई चुनौती

लगभग एक घंटे बाद अगला स्टेशन (भंडारा) आया। वहाँ हम गार्ड के डिब्बे से उतरकर अपने आरक्षित कोच की ओर जाने लगे। लेकिन गार्ड के डिब्बे से हमारे आरक्षित कोच की दूरी काफी अधिक थी। बच्चों और भारी सामान के साथ इतनी दूरी तय करना आसान नहीं था। इसलिए हम पहले एक स्लीपर कोच में चढ़ गए। अगले ठहराव (गोंदिया) पर ट्रेन रुकते ही हम एसी कोच में पहुँच गए। लेकिन हमारी मुश्किल अभी खत्म नहीं हुई थी। हमारा आरक्षित कोच सातवें नंबर पर था, जबकि जिस एसी कोच में हम चढ़े थे, वह पहला कोच था। अब हमें एक-एक करके कई कोच पार करने थे।

हम ज्यादा देर भी नहीं कर सकते थे, क्योंकि डर था कि कहीं टीटीई किसी दूसरे यात्री को हमारी बर्थ न दे दे। बच्चों और भारी सामान के साथ एक-एक कोच पार करना बेहद मुश्किल था। कभी हम बच्चों को आगे ले जाते, फिर वापस आकर सामान उठाते। फिर सामान आगे पहुँचाते और दोबारा बच्चों के पास जाते। भीड़ के बीच धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए आखिरकार हम अपने आरक्षित कोच तक पहुँचे। नागपुर स्टेशन से अपने आरक्षित कोच



और अपनी सीट तक पहुँचने में हमें लगभग दो घंटे बीस मिनट लग गए।

आखिरकार मिली राहत

सीट पर पहुँचकर हमने सबसे पहले अपना सामान व्यवस्थित किया। इतनी भागदौड़ के बाद हमारा शरीर पूरी तरह थक चुका था। कुछ देर आराम करने के बाद मन शांत हुआ। थकान इतनी ज्यादा थी कि परिवार के सभी सदस्य जल्दी ही गहरी नींद में सो गए। मैं भी ट्रेन पकड़ने तक की सारी घटनाओं के बारे में सोचता रहा--- ओला का कैंसिल होना, दोस्त का समय पर आना, ट्रैफिक जाम, स्टेशन पर दौड़ना, छूटती हुई ट्रेन, पत्नी की गार्ड से गुहार, ट्रेन का रुकना और उन दोनों सरदार जी का हमारी मदद के लिए आगे आना। इन्हीं बातों को सोचते-सोचते कब मेरी आँख लग गई, पता ही नहीं चला।

सुबह का सुहाना सफर

सुबह आँख खुली तो मौसम बेहद सुहावना था। अब तक पिछली रात की सारी थकान काफी कम हो चुकी थी। हमने नाश्ता किया और खिड़की से बाहर के सुंदर दृश्यों का आनंद लेने लगे। अब मन में किसी तरह की घबराहट नहीं थी। बस अपने गंतव्य का इंतजार था। कुछ ही समय बाद हमारा स्टेशन आ गया। हमने अपना सामान उठाया और आराम से ट्रेन से उतर गए।

इस यात्रा से मिली सीख

इस यात्रा ने मुझे एक बहुत महत्वपूर्ण बात सिखाई--- कठिन परिस्थितियों में धैर्य, साहस और समय पर लिया गया सही निर्णय हमें मंजिल तक पहुँचा ही देता है। अगर उस दिन हम घबरा जाते, उम्मीद छोड़ देते या समय पर सही निर्णय नहीं लेते, तो शायद हम ट्रेन पकड़ ही नहीं पाते। बारिश, ट्रैफिक, ओला की लगातार कैंसिल होती राइड, स्टेशन की भागदौड़, छूटती हुई ट्रेन, पत्नी की हिम्मत, गार्ड की मदद, प्लेटफॉर्म पर मौजूद उन दो सरदार जी की इंसानियत और सबसे बढ़कर परिवार का साथ--- इन सभी घटनाओं ने इस यात्रा को एक साधारण रेल यात्रा से कहीं अधिक बना दिया।

आज जब उस यात्रा को याद करता हूँ, तो लगता है कि हम केवल नागपुर से कोलकाता तक की यात्रा नहीं कर रहे थे, बल्कि उस दिन हमने घबराहट से उम्मीद तक, परेशानी से राहत तक और मुश्किल से मंजिल तक का एक यादगार सफर तय किया था। यही कारण है कि गीतांजलि एक्सप्रेस की वह यात्रा मेरे जीवन की सबसे रोमांचक और अविस्मरणीय रेल यात्राओं में हमेशा याद रहेगी।

❑❑❑





मुंबई प्रशिक्षणः यादों का एक खूबसूरत सफ़र

सुश्री यशी श्रीवास्तव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

जीवन में कुछ यात्राएँ ऐसी होती हैं, जिनके लिए हम शुरुआत में बिल्कुल तैयार नहीं होते, लेकिन वही यात्राएँ लौटते समय हमारे मन में सबसे खूबसूरत यादें छोड़ जाती हैं। शुरूआत में इन यात्राओं के लिए न कोई विशेष उत्साह होता है, न कोई खास उम्मीद, लेकिन कब यही हमारे जीवन का खूबसूरत हिस्सा बन जाती है, पता ही नही चलता। मुंबई की मेरी प्रशिक्षण यात्रा भी कुछ ऐसी ही रही।

मुंबई जाने की कहानी कुछ खास उत्साह के साथ शुरू नहीं हुई थी। जब कार्यालय में मेरी सहायक निदेशक मैडम ने मुझे इस प्रशिक्षण के बारे में बताया, तो मेरी पहली प्रतिक्रिया बहुत सामान्य थी। सच कहूँ तो मुझे इस प्रशिक्षण में जाने में कोई विशेष रूचि नहीं थी। मन में यही विचार था कि प्रशिक्षण होगा, कुछ दिन बाहर रहना पड़ेगा और फिर वापस कार्यालय आ जाना है। लेकिन शायद कुछ यात्राओं की खूबसूरती यही होती है कि वे हमारी अपेक्षाओं से बिल्कुल अलग निकलती हैं।

प्रशिक्षण में जाने की तैयारी शुरू हुई तो अगली चुनौती थी--- मुंबई जैसे बड़े शहर में रहना कहाँ है और रोज़ प्रशिक्षण केंद्र तक पहुँचना कैसे है? मुंबई मेरे लिए नया शहर था और वहाँ रहने की व्यवस्था करना अपने आप में एक बड़ी चिंता थी। आखिरकार मुझे खारघर में एक पीजी मिल गया, जहाँ मेरी मुलाकात इंदौर से आई एक अन्य प्रशिक्षु सोनल मैडम से हुई। तब कहाँ पता था कि यह संयोग आगे चलकर एक खूबसूरत दोस्ती में बदल जाएगा। हर सुबह सोनल और मैं खारघर से सीबीडी बेलापुर के लिए निकलते थे। रोज़ का यह सफ़र धीरे-धीरे हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गया। शुरुआत में जो रास्ता केवल प्रशिक्षण केंद्र तक पहुँचने का माध्यम था, वह बाद में हमारी बातचीत, हँसी-मज़ाक और दिनभर की योजनाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

हमारा प्रशिक्षण स्थल केंद्रीय सदन, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो था। पहली बार वहाँ पहुँची तो मन में प्रशिक्षण को लेकर कोई उत्साह नहीं था। परिचय का दिन भी मेरे लिए बहुत सामान्य रहा। जैसे-जैसे प्रशिक्षण आगे बढ़ा, मेरी सोच भी बदलने लगी। कक्षाएँ धीरे-धीरे उपयोगी और रोचक लगने लगीं। प्रशिक्षण से मुझे कई नई बातें सीखने को मिलीं, जिन्हें अपने कार्यक्षेत्र में भी उपयोग किया जा सकता था। लेकिन प्रशिक्षण की सबसे बड़ी खूबसूरती शायद वहाँ मिले 24 अन्य प्रशिक्षु थे। अलग-अलग शहरों, कार्यालयों और पृष्ठभूमियों से आए इन लोगों के साथ समय बिताना अपने आप में एक अनुभव था। शुरुआत में जो लोग बिल्कुल अजनबी थे, वे कुछ ही दिनों में इतने अपने लगने लगे कि उनके साथ बिताया हुआ



समय प्रशिक्षण का सबसे खूबसूरत हिस्सा बन गया।

कक्षाओं के बीच की बातें, साथ बैठना, हँसी-मज़ाक, खाने-पीने की चर्चाएँ, घूमने की योजनाएँ और छुट्टी के बाद साथ समय बिताना- इन सबने प्रशिक्षण को केवल सीखने का कार्यक्रम नहीं रहने दिया। यह धीरे-धीरे दोस्ती और यादों का एक सुंदर अध्याय बन गया।

मुंबई आएँ और उसके रंगों को महसूस किए बिना लौट जाएँ - यह तो संभव ही नहीं था। प्रशिक्षण के बाद और छुट्टियों में दोस्तों के साथ मुंबई घूमने का अवसर मिला और तब मुझे इस शहर का एक बिल्कुल अलग रूप देखने को मिला। हमने इस्कॉन मंदिर की यात्रा की। मंदिर की शांत और आध्यात्मिक वातावरण ने मुंबई की भागदौड़ के बीच एक अलग ही सुकून दिया। कुछ समय के लिए ऐसा लगा जैसे शहर की तेज़ रफ्तार से दूर किसी शांत दुनिया में आ गए हों। दोस्तों के साथ वहाँ बिताया समय और मंदिर की सकारात्मक ऊर्जा मन में लंबे समय तक बनी रही। इसके बाद सिद्धिविनायक मंदिर जाना भी एक विशेष अनुभव रहा। मुंबई की व्यस्तता के बीच श्रद्धा और आस्था से भरे इस स्थान पर जाना अपने आप में यादगार था। दर्शन के बाद मन में एक अलग तरह की शांति महसूस हुई।

मुंबई की यात्रा में दोस्तों के साथ मॉल घूमना भी खूब हुआ। कभी खाने के लिए, कभी खरीदारी के लिए और कभी बस यूँ ही साथ समय बिताने के लिए। असल में जगह से ज्यादा मायने उन लोगों का था, जिनके साथ हम वहाँ थे। हमने पैराडॉक्स म्यूसियम भी देखा। वहाँ की अलग-अलग रोचक और भ्रम पैदा करने वाली कलाकृतियों और अनुभवों ने हमें खूब हँसाया और आश्चर्यचकित किया। तस्वीरें खिंचवाना, एक-दूसरे के साथ मज़ेदार पोज़ बनाना और हर चीज़ को अलग-अलग अंदाज़ में देखने की कोशिश करना, ये सब अपने आप में बहुत मज़ेदार था। उस दिन लगा कि कभी-कभी बचपन जैसी सहज खुशी भी ज़रूरी होती है, जहाँ किसी बात की चिंता किए बिना बस दोस्तों के साथ हँसा जाए। इन जगहों की खूबसूरती से ज्यादा खूबसूरत था उन्हें दोस्तों के साथ देखना। शायद इसी वजह से इन स्थानों से जुड़ी यादें मेरे लिए हमेशा विशेष रहेंगी। मुंबई की यात्रा खरीददारी के बिना भी अधूरी रहती। सोनल मैम और रुचि के साथ मैंने मुंबई के कई प्रसिद्ध बाजारों और शॉपिंग स्थानों का आनंद लिया। हम कोलाबा मार्केट गए, जहाँ मुंबई की चहल-पहल, दुकानों की विविधता और खरीददारी का अपना अलग ही आकर्षण था। तरह-तरह की चीज़ें देखना, दुकानों पर मोलभाव करना और एक-दूसरे के लिए चीज़ें पसंद करना, हर छोटी बात में मज़ा था। इसके बाद बांद्रा मार्केट और हिल रोड की खरीदारी भी खूब यादगार रही। दुकानों पर घूमते हुए कभी कोई कपड़ा पसंद आ जाता, कभी कोई एक्सेसरी, तो कभी ऐसी चीज़ मिल जाती जिसे खरीदने की कोई योजना ही नहीं थी। और फिर शुरू होती थी - ''ले लें या छोड़ दें?'' वाली हमारी लंबी चर्चा।



प्रशिक्षण के दौरान हमें केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो (CTB) की ओर से एक साइट विज़िट का अवसर भी मिला। हमारे शिक्षकों और सभी प्रशिक्षणार्थियों के साथ TIFR (टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च) जाना अपने आप में एक अलग और यादगार अनुभव था। रास्ते भर साथियों के साथ बातचीत, हँसी-मज़ाक और मुंबई के अलग-अलग दृश्यों को देखते हुए सफर कब पूरा हो गया, पता ही नहीं चला। TIFR का परिसर समुद्र के किनारे स्थित होने के कारण वहाँ पहुँचते ही वातावरण बिल्कुल अलग महसूस हुआ। एक ओर ज्ञान और शोध से जुड़ा यह प्रतिष्ठित संस्थान था और दूसरी ओर पास ही फैला हुआ अथाह समुद्र--- दोनों का संगम उस जगह को बेहद आकर्षक बना रहा था। हमने वहाँ कई तस्वीरें खिंचवाईं और कुछ समय समुद्र के किनारे बिताया। प्रशिक्षण की व्यस्त दिनचर्या के बीच मिला यह छोटा-सा विराम मन को तरोताज़ा करने वाला था। आज जब मुंबई प्रशिक्षण के उन दिनों को याद करती हूँ, तो TIFR की वह यात्रा भी उन खूबसूरत पलों में शामिल है, जिन्हें मैं अपने मन में हमेशा सहेजकर रखना चाहूँगी।

देखते ही देखते प्रशिक्षण के दिन समाप्त होने लगे। जिस प्रशिक्षण में जाने को लेकर शुरुआत में मेरे मन में कोई खास उत्साह नहीं था, वही अब खत्म होने का नाम सुनकर मन को उदास करने लगा था। नागपुर लौटने का समय आया तो मन में कई भावनाएँ थीं। एक ओर अपने शहर और अपने काम पर लौटने की खुशी थी, लेकिन दूसरी ओर उन लोगों से दूर होने का एहसास भी था, जिनसे कुछ ही दिनों में इतनी अच्छी दोस्ती हो गई थी। मुंबई से लौटते समय मेरे साथ केवल सामान नहीं था। मेरे साथ थीं--- खारघर की सुबहें, सीबीडी बेलापुर तक का सफ़र, केंद्रीय सदन की कक्षाएँ, दोस्तों के साथ की हँसी, मंदिरों की शांति, मॉल की मस्ती, Paradox Museum की मज़ेदार तस्वीरें, कोलाबा और बांद्रा की खरीदारी और उन 24 साथियों की अनगिनत यादें। मुंबई से नागपुर की ओर लौटते हुए मन में एक ही सवाल बार-बार आ रहा था--- ''क्या हम फिर कभी कहीं यूँ ही साथ मिल पाएँगे?'' शायद ज़िंदगी हमें फिर किसी शहर, किसी यात्रा या किसी संयोग में एक-दूसरे के सामने ला दे। शायद फिर से वही हँसी सुनाई दे, वही किस्से दोहराए जाएँ और फिर से हम कुछ नए पल अपनी यादों में जोड़ पाएँ। आज जब उस प्रशिक्षण यात्रा को याद करती हूँ, तो महसूस होता है कि मैं मुंबई प्रशिक्षण लेने गई थी, लेकिन लौटकर अपने साथ दोस्ती, अनुभव और जीवन भर संजोकर रखने वाली यादें लेकर आई। मुंबई से लौट आई हूँ, लेकिन मुंबई की वे यादें आज भी मेरे मन में कहीं ठहरी हुई हैं।

❑❑❑





मेरी केदारनाथ यात्रा और आखिरी ज्योतिर्लिंग के दर्शन

श्री अनुराग पाठक
आशुलिपिक ग्रेड-II

जिंदगी में कुछ यात्राएँ ऐसी होती हैं जिन्हें इंसान कभी नहीं भूलता। मेरे लिए केदारनाथ की यात्रा भी ऐसी ही एक यात्रा थी। यह यात्रा मैंने अपने कुछ खास दोस्तों के साथ की थी। हम सभी भगवान शिव में बहुत विश्वास रखते हैं और हमारी इच्छा थी कि हम बारह ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करें। धीरे-धीरे हमने कई ज्योतिर्लिंगों के दर्शन किए और आखिर में केवल केदारनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन बाकी रह गए थे। इसलिए जब हमें केदारनाथ जाने का मौका मिला, तो हमारी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। हमें लग रहा था कि हमारी बहुत पुरानी इच्छा अब पूरी होने वाली है। हमने यात्रा की तैयारी कई दिन पहले से शुरू कर दी। गर्म कपड़े, अच्छे जूते, दवाइयाँ, पानी की बोतल और खाने का थोड़ा सामान हमने अपने बैग में रख लिया। हम जानते थे कि पहाड़ों पर पैदल चलना आसान नहीं होगा, इसलिए हमने ज्यादा सामान नहीं लिया।

यात्रा वाले दिन हम सुबह बहुत जल्दी उठ गए। हम सभी समय पर एक जगह मिले और अपनी यात्रा शुरू की। रास्ते में हम खूब बातें करते रहे और पुराने किस्से याद करके हँसते रहे। जैसे-जैसे हम पहाड़ों की ओर बढ़ रहे थे, मौसम बदलता जा रहा था। गर्मी पीछे छूट गई और ठंडी हवा महसूस होने लगी। रास्ते में ऊँचे-ऊँचे पहाड़, हरे पेड़, छोटे गाँव और तेज बहती नदियाँ देखकर हम बहुत खुश हुए। कई जगह रास्ता इतना सुंदर था कि हम गाड़ी रोककर तस्वीरें लेते थे। कहीं बादल पहाड़ों को छूते हुए दिखाई देते थे और कहीं पहाड़ों के बीच से नदी बहती दिखाई देती थी। ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी दूसरी दुनिया में आ गए हों। रास्ते में हमने चाय पी और कुछ स्थानीय लोगों से भी बात की। जैसे-जैसे हम केदारनाथ के करीब पहुँच रहे थे, हमारे मन में उत्साह बढ़ता जा रहा था।

कुछ समय बाद हमारी पैदल यात्रा शुरू हुई। हमने अपने बैग ठीक से लगाए और एक-दूसरे से कहा कि चाहे रास्ता कितना भी कठिन हो, हम सभी साथ चलेंगे। शुरुआत में रास्ता आसान लगा, लेकिन थोड़ी देर बाद चढ़ाई कठिन होने लगी। कहीं रास्ता बहुत ऊँचा था तो कहीं पत्थरों से भरा हुआ था। कुछ समय बाद हमारे पैरों में दर्द होने लगा और साँस भी तेज चलने लगी। हम थोड़ी-थोड़ी देर में रुककर आराम करते और पानी पीते थे। अगर कोई दोस्त ज्यादा थक जाता, तो बाकी दोस्त उसका हौसला बढ़ाते। हम एक-दूसरे से कहते, 'बस थोड़ा और चलना है, बाबा केदार बुला रहे हैं।'



यही बात हमें आगे बढ़ने की ताकत देती रही। रास्ते में बहुत सारे दूसरे यात्री भी दिखाई दे रहे थे। कोई अपने परिवार के साथ जा रहा था और कोई दोस्तों के साथ। सभी के चेहरे पर थकान थी, लेकिन उससे ज्यादा भगवान के दर्शन की खुशी दिखाई दे रही थी। रास्ते में 'हर हर महादेव' और 'जय बाबा केदार' के नारे सुनाई देते थे। इन नारों से पूरा रास्ता भक्तिमय लग रहा था।

चलते-चलते मौसम अचानक बदल गया और हल्की बारिश शुरू हो गई। हमने अपनी जैकेट पहनी और कुछ देर रुक गए। पहाड़ों में मौसम बहुत जल्दी बदल जाता है, इसलिए हमें सावधानी रखनी थी। बारिश रुकने के बाद हमने फिर से चलना शुरू किया। अब तक हम काफी थक चुके थे। मेरे पैरों में भी बहुत दर्द हो रहा था। एक पल के लिए मुझे लगा कि शायद आगे चलना मुश्किल होगा, लेकिन जब मैंने अपने दोस्तों को देखा तो मुझे हिम्मत मिली। वे भी थके हुए थे, फिर भी एक-दूसरे का साथ नहीं छोड़ रहे थे। हमने तय किया कि चाहे कितना भी समय लगे, हम सभी साथ में मंदिर तक पहुँचेंगे। उस समय मुझे महसूस हुआ कि यात्रा केवल मंजिल तक पहुँचने का नाम नहीं है। असली खुशी उस रास्ते में होती है, जहाँ अपने लोग साथ हों और मुश्किल समय में एक-दूसरे का हौसला बढ़ाएँ।

काफी समय तक चलने के बाद आखिर वह पल आया जिसका हम सभी को इंतजार था। दूर से हमें केदारनाथ मंदिर दिखाई दिया। मंदिर को देखते ही हमारी सारी थकान जैसे गायब हो गई। हम कुछ देर वहीं खड़े होकर मंदिर को देखते रहे। हमारे लिए यह बहुत भावुक पल था, क्योंकि यह हमारी बारह ज्योतिर्लिंगों की यात्रा का आखिरी पड़ाव था। हमने एक-दूसरे को गले लगाया और भगवान शिव को धन्यवाद दिया कि उन्होंने हमें यहाँ तक आने का मौका दिया। मंदिर के आसपास का वातावरण बहुत सुंदर और शांत था। चारों तरफ ऊँचे पहाड़ दिखाई दे रहे थे और ठंडी हवा चल रही थी। मंदिर की घंटियों की आवाज और भक्तों के 'हर हर महादेव' के जयकारे मन को बहुत शांति दे रहे थे।

जब हमारी बारी आई और हम मंदिर के अंदर पहुँचे, तो मेरे मन में बहुत सारी भावनाएँ थीं। मैंने भगवान शिव के सामने आँखें बंद कीं और कुछ देर शांत खड़ा रहा। मैंने अपने परिवार, दोस्तों और अपने जीवन से जुड़े सभी लोगों के लिए प्रार्थना की। मैंने भगवान से कोई बड़ी चीज नहीं माँगी। बस यही इच्छा की कि वे हमें हमेशा सही रास्ते पर चलने की शक्ति दें और हमारे परिवारों को खुश रखें। उस समय मुझे लगा कि मेरी सारी थकान दूर हो गई है। मन में एक अलग तरह की शांति महसूस हो रही थी। केदारनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन मेरे लिए केवल एक धार्मिक अनुभव नहीं था, बल्कि मेरे जीवन की एक बहुत बड़ी याद बन गया। मंदिर से बाहर आने के बाद हम सभी बहुत खुश थे।



हमने एक-दूसरे को देखा और कहा कि आखिरकार हमारे बारह ज्योतिर्लिंगों के दर्शन पूरे हो गए।

दर्शन के बाद हम कुछ समय मंदिर के पास बैठे रहे। हम पहाड़ों को देखते रहे और अपनी यात्रा के बारे में बातें करते रहे। हमने कई तस्वीरें लीं, लेकिन हमें पता था कि तस्वीरें उस जगह की सुंदरता को पूरी तरह नहीं दिखा सकतीं। वहाँ की ठंडी हवा, पहाड़ों की शांति और मंदिर की घंटियों की आवाज हमेशा हमारे मन में रहेगी। कुछ समय बाद हम वापस लौटने के लिए तैयार हुए। वापसी का रास्ता भी आसान नहीं था, लेकिन अब हमारे मन में खुशी थी। हम बार-बार उस पल को याद कर रहे थे जब हमने पहली बार केदारनाथ मंदिर को देखा था। रास्ते में हम मजाक करते रहे और एक-दूसरे की थकान कम करने की कोशिश करते रहे। कई बार हमने पीछे मुड़कर मंदिर की ओर देखा। ऐसा लग रहा था जैसे हम उस जगह को छोड़ना नहीं चाहते हों।

जब हमारी पूरी यात्रा खत्म हुई और हम वापस घर पहुँचे, तो शरीर बहुत थका हुआ था, लेकिन मन बहुत खुश था। हमने परिवार वालों को अपनी यात्रा के बारे में बताया और तस्वीरें दिखाईं। उस दिन मुझे महसूस हुआ कि यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक बन गई है। केदारनाथ जाना मेरे लिए केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं थी। यह मेरे दोस्तों के साथ बिताया हुआ ऐसा समय था जिसने हमारी दोस्ती को और मजबूत कर दिया। हमने रास्ते की मुश्किलों का सामना किया, एक-दूसरे की मदद की, साथ हँसे, साथ थके और आखिर में साथ मिलकर भगवान शिव के दर्शन किए। सबसे बड़ी खुशी यह थी कि हमारी बारह ज्योतिर्लिंगों की यात्रा पूरी हो गई थी और केदारनाथ हमारा आखिरी ज्योतिर्लिंग था। आज भी जब मैं उस यात्रा को याद करता हूँ, तो मेरे मन में एक ही आवाज आती है--- 'हर हर महादेव!' इस यात्रा ने मुझे सिखाया कि रास्ता कितना भी कठिन हो, अगर विश्वास मजबूत हो और अच्छे दोस्त साथ हों, तो हर मंजिल हासिल की जा सकती है। बाबा केदार की यह यात्रा मेरे जीवन की ऐसी याद है जिसे मैं हमेशा अपने दिल में रखूँगा।

❑❑❑







सफर जो याद बन गया

श्री विपिन
आशुलिपिक ग्रेड-II

मनुष्य के जीवन में यात्रा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। यात्रा केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमें नए अनुभव, नई सीख, नई संस्कृतियों और जीवन को देखने का नया दृष्टिकोण भी प्रदान करती है। मुझे भी अपने जीवन में एक ऐसी यात्रा करने का अवसर मिला, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। यह यात्रा मेरे परिवार के साथ मध्य प्रदेश की थी, जिसने मेरे जीवन में अनेक सुखद और भावनात्मक यादें जोड़ दी।

यह यात्रा अक्टूबर महीने में प्रारंभ हुई । सबसे पहले मैं नागपुर से ट्रेन द्वारा दिल्ली पहुँचा। दिल्ली पहुँचने के बाद हमारे परिवार ने मध्य प्रदेश घूमने का निर्णय लिया। हमारा पूरा परिवार इस यात्रा में साथ था - मेरे माता-पिता, मेरी बहन और मैं। दिल्ली से हमने इंदौर जाने के लिए सेंकड एसी ट्रेन से सफर किया। रात का सफर था और पूरे परिवार के साथ यात्रा करने का उत्साह अलग ही था। ट्रेन की खिड़की से बाहर दिखाई देने वाला दृश्य, ठंडी हवा और परिवार के साथ बिताए हुए पल इस यात्रा को और भी आनंदमय बना रहे थे।

इंदौर पहुँचने के बाद हम उज्जैन के पास स्थित एक सुंदर से होटल में ठहरे। होटल बहुत ही आरामदायक और आकर्षक था। होटल पहुँचते ही हम सबने थोड़ा विश्राम किया और फिर नीचे जाकर दोपहर का भोजन किया। भोजन के बाद शाम को हमने होटल में कई मनोरंजक गतिविधियाँ की। जैसे मैंने जिम किया, स्नूकर खेला, शतरंज खेली, कैरम खेला और परिवार के साथ खूब हँसी मजाक किया। उस दिन का वातावरण बहुत ही आनंदमय था। परिवार के साथ बिताया गया वह समय मेरे लिए अत्यंत यादगार बन गया। अगले दिन हम सभी महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए निकले। वहाँ बहुत अधिक भीड़ थी, क्योंकि महाकालेश्वर मंदिर देश के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। भीड़ अधिक होने के कारण हमने वीआईपी एंट्री ली। हमें जब बाबा महाकाल के दर्शन हुए तब मन को अत्यंत शांति और प्रसन्नता प्राप्त हुई। मंदिर का वातावरण भक्तिमय था। चारों ओर ''हर हर महादेव'' के जयकारे गूँज रहे थे। वह अनुभव मेरे जीवन के सबसे सुंदर आध्यात्मिक अनुभवों में से एक था।

दर्शन करने के बाद रात काफी हो चुकी थी। रास्ते में हम एक रेस्टॉरेंट में रुके और वहाँ स्वादिष्ट भोजन किया। हमने पनीर, दाल, चावल और कई अन्य व्यंजन खाए। यात्रा की थकान के बावजूद परिवार के साथ भोजन करने का आनंद अलग ही था। होटल पहुँचते-पहुँचते रात के लगभग दो बज चुके थे, इसलिए हम सभी बहुत थक गए थे और आराम करने चले गए।



अगले दिन हम ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए रवाना हुए। ओंकारेश्वर का वातावरण अत्यंत शांत और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर था। वहाँ भी काफी भीड़ थी, लेकिन मंदिर के दर्शन अत्यंत सुखद रहे। दर्शन के बाद हमने नाव की सवारी की। यह अनुभव मेरे जीवन का पहला ऐसा अनुभव था जिसमें मैंने नदी के बीच से पूरे मंदिर का दृश्य देखा। वहाँ नर्मदा और कावेरी नदियों का संगम भी देखने को मिला। साथ ही हमने इंदिरा सागर बाँध भी देखा। प्रकृति का वह अद्भुत दृश्य मेरे मन में हमेशा के लिए बस गया। हालाँकि, वहाँ पहाड़ी से नीचे उतरते समय मुझे थोड़ा डर भी लगा। रास्ता काफी कठिन और खतरनाक था। हम पाँच लोग साथ थे। मैं तो आसानी से चल पा रहा था, लेकिन मेरी माता जी को चलने में थोड़ी परेशानी हो रही थी। उस समय मुझे उनकी चिंता हो रही थी। उस पल मुझे यह एहसास हुआ कि परिवार हमारे जीवन का सबसे बड़ा सहारा होता है और हमें हमेशा उनका ध्यान रखना चाहिए।

रात को हम होटल लौटे और स्वादिष्ट भोजन करने के बाद आराम किया। अगले दिन हम इंदौर के प्रसिद्ध राजवाड़ा पैलस घूमने गए। राजवाड़ा का ऐतिहासिक महत्व और उसकी भव्यता देखकर मैं अत्यंत प्रभावित हुआ। मुझे ऐतिहासिक स्थानों के बारे में जानना बहुत अच्छा लगता है। वहाँ जाकर ऐसा महसूस हुआ मानो हम इतिहास के किसी पुराने युग में पहुँच गए हो। वहाँ की वास्तुकला और संस्कृति ने मेरे मन को बहुत प्रभावित किया।

रात के समय हम प्रसिद्ध सराफा बाजार गए। यह बाजार रात में लगने वाला अत्यंत प्रसिद्ध फूड मार्केट है। वहाँ का वातावरण बहुत ही जीवंत और आनंदमय था। हमने वहाँ दही वडा, आलू टिक्की, नारियल से बने विशेष पेय और कई स्वादिष्ट व्यंजन खाए। ''छप्पन भोग'' जैसी प्रसिद्ध दुकानों के व्यंजन भी हमने चखे। वहाँ का भोजन स्वादिष्ट होने के साथ-साथ एक नया अनुभव भी था। हमने खूब मस्ती की और परिवार के साथ यादगार पल बिताए। उस रात होटल लौटकर भी हम लोग खेल खेलते रहे और खूब हँसी-मजाक करते रहे। यह मेरी जिंदगी का पहला, ऐसा अनुभव था जब मैंने अपने परिवार के साथ इतना अधिक समय खुशी और आनंद में बिताया। इसके बाद हमने खजराना गणेश मंदिर सहित कई अन्य मंदिरों के दर्शन किए। खजराना मंदिर का वातावरण अत्यंत शांत और भक्तिमय था। वहाँ जाकर मन को गहरी शांति मिली। हमने भगवान से अपने परिवार की सुख-समृद्धि और उज्जवल भविष्य की कामना की। धार्मिक स्थलों की यह यात्रा मेरे लिए केवल घूमने का माध्यम नही थी, बल्कि यह आत्मिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने का भी अवसर था।

कुछ दिनों बाद हमारी यात्रा समाप्त होने वाली थी। वापसी के समय मेरे परिवार के चार सदस्य दिल्ली जाने के लिए एक फ्लाइट में बैठे, जबकि मुझे अकेले इंदौर से नागपुर की फ्लाइट से लौटना था। यह मेरे जीवन का पहला ऐसा अवसर था जब मैं परिवार से अलग होकर अकेले यात्रा कर रहा था। उस समय मुझे बहुत



भावुक महसूस हुआ। अपने परिवार से दूर रहने का दुख मुझे अंदर से महसूस हो रहा था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि परिवार से दूर होना इतना कठिन लगेगा। उस पल मुझे परिवार के महत्व का वास्तविक एहसास हुआ।

वापसी के समय इंदौर एयरपोर्ट पर हमें एक बहुत ही रोचक अनुभव हुआ। उस समय महिला क्रिकेट विश्व कप चल रहा था इसलिए वहाँ ऑस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेट टीम भी मौजूद थी। हमने पहली बार इतने प्रसिद्ध विदेशी खिलाड़ियों को अपने सामने देखा। यह अनुभव हमारे लिए बहुत ही रोमांचक था। एयरपोर्ट पर काफी भीड़ थी और सभी लोग खिलाड़ियों को देखने के लिए उत्साहित थे। वहाँ हमें पता चला कि इंदौर के कुछ लड़कों ने ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों के साथ गलत व्यवहार और छेडछाड़ करने की कोशिश की थी, जिसके कारण वहाँ सुरक्षा व्यवस्था और अधिक सख्त कर दी गई थी। यह सुनकर बहुत ही दुख हुआ, क्योंकि हमारे देश में आने वाले मेहमानों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना हमारी संस्कृति की पहचान है। इस घटना से मैंने यह सीखा कि हमें हमेशा दूसरों के प्रति सम्मान और मर्यादा बनाए रखनी चाहिए।

यह यात्रा से जुड़ी एक बात मेरे जीवन में हमेशा विशेष स्थान रखेगी। यह यात्रा मेरे और मेरे पिताजी की पहली और अंतिम यात्रा थी। अक्टूबर महीने में मध्यप्रदेश से लौटने के बाद नवम्बर में मेरे पिताजी का देहांत हो गया। जब भी मैं इस यात्रा को याद करता हूँ, मेरी आँखे नम हो जाती है। लेकिन इसके साथ ही मेरे मन में एक संतोष और खुशी भी है कि मैं अपने पिताजी को मध्यप्रदेश घुमा पाया और उन्हें भगवान महाकालेश्वर तथा ओंकारेश्वर जैसे प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करा पाया। परिवार के साथ बिताए गए वे पल आज मेरे जीवन की सबसे अनमोल यादें बन चुके है। इस यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि अपने प्रियजनों के साथ बिताया गया हर क्षण अत्यंत मूल्यवान होता है क्योंकि जीवन का कोई भरोसा नहीं होता। आज भी जब मैं उन पलों को याद करता हूँ तो ऐसा लगता है मानो वे यादें हमेशा मेरे साथ जीवित रहेंगी।

यह पूरी यात्रा मेरे जीवन की सबसे सुंदर ओर अविस्मरणीय यात्राओं में से एक रही। इस यात्रा ने मुझे आनंद, उत्साह आध्यत्मिक शांति, ऐतिहासिक ज्ञान और पारिवारिक प्रेम सब कुछ एक साथ दिया। मैंने इस यात्रा से यह सीखा कि जीवन में परिवार के साथ बिताया गया समय सबसे मूल्यवान होता है। यात्रा हमें केवल नए स्थान नहीं दिखाती, बल्कि हमारे जीवन को नई यादों और अनुभवों से भी भर देती है।

अंत में, मैं यही कहना चाहूँगा कि यह यात्रा मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है। मैं भविष्य में भी अपने परिवार के साथ ऐसी यात्राएँ करना चाहूँगा ताकि जीवन के सुदंर क्षण को और अधिक करीब से महसूस कर सँकू।

❑❑❑





दिघोरी, पायली द्वीप एवं अमोदा गढ़ की यात्रा

श्री राजेश कुमार कटरे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

मध्यप्रदेश को भारत का हृदय कहा जाता है और यह राज्य अपने घने वनों, पर्वतों, नदियों, ऐतिहासिक स्थलों तथा जैव विविधता के लिए देशभर में विशिष्ट पहचान रखता है। इन्हीं प्राकृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों से समृद्ध मेरा गृह जिला सिवनी अनेक ऐसे दर्शनीय स्थलों को समेटे हुए है, जो पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण होने के बावजूद आज भी अपेक्षाकृत कम चर्चित हैं। उनमें से दिघोरी, पायली द्वीप तथा अमोदा गढ़ ऐसे ही स्थल हैं, जहाँ इतिहास, प्रकृति, संस्कृति और लोकजीवन का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

वर्ष 2023 के अक्टूबर माह में परिवार के साथ यात्रा का कार्यक्रम बना तथा इन स्थलों को निकट से देखने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ। यह केवल एक परिवारिक यात्रा नहीं थी, बल्कि प्रकृति के सानिध्य में बिताया गया ऐसा अनुभव था जिसने मन को नवीन ऊर्जा, क्षेत्र के प्रति आत्मीयता और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता से भर दिया। यह यात्रा-वृत्तांत उन्हीं अविस्मरणीय क्षणों का शब्दचित्र है।

यात्रा आरंभ वाले दिन प्रातःकाल से ही पर्यटन को लेकर उत्साह था। हम सभी समय पर तैयार होकर आवश्यक सामग्री साथ लेकर निजी वाहन से हमने यात्रा अपने गाँव साल्हेंखुर्द से प्रारम्भ किया। वर्षा ऋतु के पश्चात का समय होने के कारण चारों ओर हरियाली अपने चरम पर थी। खेतों में उस समय मुख्यतः धान एवं मक्का की लहलहाती फसलें, कहीं-कहीं गेहूं के खेतों में हरियाली थी। दूर-दूर तक फैले सागौन, साल, पलाश, महुआ, तेंदू और बाँस के सघन वन, पहाड़ियों पर बिछी घास एवं झाड़ियों रूपी हरी चादर तथा शीतल समीर, घुमावदार सड़कें और पक्षियों का मधुर कलरव यात्रा को अत्यंत आनंददायक बना रहे थे।

मार्ग में पारिवारिक सदस्यों के बीच हँसी-मज़ाक, नई-पुरानी यादों की चर्चा तथा स्थानीय रिवाजों पर बातचीत का क्रम निरंतर चलता रहा। सड़क के दोनों ओर दिखाई देने वाले ग्रामीण जीवन के दृश्य--- मिट्टी के घर, बैलगाड़ियाँ, खेतों में किसान तथा विद्यालय जाते बच्चे, वहाँ के ग्राम्य जीवन की सरलता और सहजता का परिचय दे रहे थे। अब हम यात्रा के पहले पड़ाव --- दिघोरी पहुँच गए। इस गाँव के पास छोटी-छोटी दो पहाड़ियाँ हैं यहाँ से सूर्योदय एवं सूर्यास्त का दृश्य मनमोहक होता है किंतु हमारे पहुँचने और यहाँ से रवानगी का समय ऐसा था कि हम नहीं देख पाए। दिघोरी केवल एक गाँव या पर्यटन स्थल नहीं है, बल्कि प्रकृति और इतिहास का ऐसा मिलन-बिंदु है जहाँ अतीत की स्मृतियाँ आज भी मौजूद हैं।

यह स्थान सिवनी जिला मुख्यालय से पश्चिम दिशा में लगभग 24 किमी दूर दिघोरी ग्राम (राहीवाड़ा के पास) में स्थित है। सिवनी



जिले के दिघोरी गाँव में स्थित श्री गुरु रत्नेश्वर मंदिर एशिया का सबसे बड़ा और दुर्लभ स्फटिक शिवलिंग वाला प्रसिद्ध शिवधाम है। इस शिवलिंग की स्थापना द्वितीय पीठाधीश्वर शंकाराचार्य श्री स्वरूपानंद जी महाराज द्वारा की गई है दिघोरी ब्रह्मलीन शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज की जन्मस्थली भी है। यहाँ स्थापित स्फटिक शिवलिंग बेहद पवित्र और अद्वितीय माना जाता है। हमने यहाँ शिव मंदिर में पूजा-अर्चना की। इसके बाद इस गाँव की मुख्य कृषि उपज सीताफल, मक्का एवं ककड़ी (खीरा) खाए। मंदिर परिसर के बाहर एवं सड़क पर खासकर महिलाएं भुने हुए मक्का, सीताफल एवं ककड़ी राहगीर एवं पर्यटकों को बेचती हैं।

दिघोरी की आध्यात्मिक यात्रा और ग्रामीण संस्कृति का आनंद प्राप्त करने के पश्चात हमारा अगला पड़ाव था--- पायली द्वीप। यात्रा का यह चरण सबसे अधिक रोमांचक और उत्सुकतापूर्ण था। मार्ग में जैसे-जैसे हम पायली की ओर बढ़ रहे थे, प्रकृति का सौंदर्य और भी मनोहारी होते जा रहा था। घने वृक्षों की कतारें, पहाड़ियों के बीच से गुजरती सड़कें और खास बात यह थी कि इस रास्ते पर वर्षा के जल से भरे हुए प्राकृतिक तालाब देखने मिले।

कुछ ही समय बाद विशाल जलराशि का दृश्य सामने आया। दूर तक फैला शांत जल, उसके बीच स्थित हारा-भरा द्वीप और जल में प्रतिबिंबित होते वृक्षों की छवि कोई चित्रकारी प्रतीत हो रही थी। यह स्थान इतना आकर्षक है कि पहली नजर में ही मन को मोह लेता है। चारों ओर शांत जलराशि से घिरा यह द्वीप अनेकानेक पक्षियों का आश्रय है। शाम होते ही यहाँ वृक्षों पर बहुत बड़ी संख्या में बगुले आ जाते हैं जिससे हरे वृक्ष सफेद दिखाई देते हैं। उस शाम हमने इस दृश्य को नजदीक से देखा। प्रकृति का यह सजीव दृश्य केवल आँखों को ही नहीं, बल्कि मन और आत्मा को भी गहराई से स्पर्श करता है।

पायली द्वीप की हमारी यात्रा का सबसे आकर्षक अनुभव नौकायन रहा। पहले तो मेरी माताजी नौकायन के लिए तैयार नहीं थी लेकिन फिर वह भी मान गई। हम सभी सुरक्षा संबंधी आवश्यक निर्देशों का पालन करते हुए जीवनरक्षक जैकेट पहनकर नौका में सवार हुए। धीरे-धीरे नौका द्वीप में आगे बढ़ने लगी। नाव के आगे बढ़ते ही जल में लहरों की ध्वनि अद्भुत शांति प्रदान कर रही थी। दूर-दूर तक फैला नीला जल, उसके बीच छोटे-छोटे द्वीप तथा आकाश में उड़ते पक्षियों का दृश्य अतीव मनोरम था। नौकायन के दौरान चालक ने इस क्षेत्र की जानकारी, द्वीप के साथ बने जलाशय के निर्माण तथा आसपास के प्राकृतिक परिवेश के बारे में बहुत सारी जानकारी दी। परिवार के सभी सदस्यों की व्यस्तता से दूर इस द्वीप में बिताए गए तीन से चार घंटे वास्तव में जीवन के बहुमूल्य क्षण बन गए।

पायली जबलपुर और सिवनी के लखनादौन तहसील के मध्य एक ग्रामीण पृष्ठभूमि को समेटे हुए एक भौगोलिक संरचना है। इस क्षेत्र के आसपास बसे ग्रामीण समुदाय का जीवन प्रकृति से गहरे जुड़ा हुआ है। स्थानीय लोगों का सरल व्यवहार, अतिथि-सत्कार की भावना सराहनीय है। हमें यहाँ जानकारी मिली कि कुछ लोग पर्यटकों के लिए उचित मूल्य पर मिट्टी वाले चूल्हे पर लकड़ियों की आग से भोजन भी तैयार कर देते हैं। चूंकि शाम का



समय हो ही गया था, आगे 68 किलोमीटर वापस जाना था तो हमने भी यहीं पर खाना बनवाकर रात्रिभोज किया। वापस सिवनी आकर रात्रि विश्राम किया।

पायली की प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण को पीछे छोड़ते हुए हमारी यात्रा का अंतिम पड़ाव था--- अमोदा गढ़। अमोदा गढ़ की ओर बढ़ते हुए मन में उत्सुकता थी कि यह ऐतिहासिक स्थल कैसा होगा? यहाँ क्या-क्या देखने मिलेगा? इत्यादि। अगले दिन फिर सिवनी से अमोदा गढ़ के लिए रवाना हुए। यहाँ भी मार्ग के दोनों ओर प्रकृति के सुंदर दृश्य मन को शांति प्रदान कर रहे थे।

अमोदा गढ़ को प्रसिद्ध उपन्यासकार रूडयार्ड किपलिंग की मशहूर कृति द जंगल बुक के पात्र 'मोगली' की वास्तविक कार्यस्थली या जन्मस्थली माना जाता है। वन विभाग द्वारा इसे 'मोगली लैंड' के रूप में प्रचारित और संरक्षित किया गया है। हमें इस यात्रा के माध्यम से मोगली की कहानी से प्रत्यक्ष जुड़ने का अवसर मिला। मोगली के इस वन्य क्षेत्र में आकर बच्चों को बहुत आनंद आया। यह बहुत बड़ा वन्य क्षेत्र है यहाँ से हिरणी नदी गुजरती है और यह क्षेत्र चारों तरफ से सुंदर पहाड़ियों, गुफाओं, झरनों और हरे-भरे वातावरण से घिरा हुआ है। यह ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण यहाँ रेस्टोरेंट या होटल नहीं हैं। अक्सर लोग पिकनिक मनाने यहाँ आते हैं स्वयं ही खाना पकाकर खाते हैं।

अमोदा गढ़ में गोंडवाना सामराज्य की सोना रानी का महल जीर्ण-क्षीर्ण अवस्था में देखने मिला। ऐतिहासिक मान्यता है कि सुरक्षा की दृष्टि से इस महल के साथ युद्ध के लिए किला एवं दुर्ग भी यहाँ थे। वास्तव में अब यहाँ केवल रानी के महल, किला एवं दुर्ग के अवशेष ही हैं। बड़े क्षेत्रफल में फैले ये भग्नावेश गोंडवाना काल में वीरता की मिशाल रहे हैं।

दिघोरी, पायली द्वीप और अमोदा गढ़ की यह यात्रा केवल एक पर्यटन नहीं थी, बल्कि इतिहास, प्रकृति और संस्कृति से साक्षात्कार का एक सशक्त अवसर थी। दिघोरी ने आध्यात्मिक शांति, पायली द्वीप ने प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का सजीव अनुभव कराया एवं अमोदा गढ़ ने हमें अपने गौरवशाली अतीत से परिचित कराया। इस प्रकार हमारी यात्रा पारिवारिक सदस्यों के साथ समाप्त हुई। यात्रा समाप्त होने के बाद जब हम पुनः गाँव लौट रहे थे, तब मानो वाहन की खिड़की से पीछे छूटती हरियाली, पहाड़, वन आदि हमें अपनी ओर खींच रहे थे। ये तीनों पर्यटन स्थल अति मनमोहक हैं। इनका संरक्षण और सुरक्षा भी हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। यात्राएँ केवल नए स्थानों तक नहीं ले जातीं, वे मनुष्य को स्वयं के और अधिक निकट भी ले आती हैं। प्रकृति, इतिहास और संस्कृति के बीच बिताया गया प्रत्येक क्षण जीवन को समृद्ध बनाता है तथा भविष्य के प्रति नई ऊर्जा और सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

❑❑❑







सैंच्युरी ऑफ ट्रूथ

श्रीमती रिंकू सिन्हा
स.ले.प.अ.

'कार्यालय की गृह पत्रिका 'रश्मि' के 41 वें अंक यात्रा संस्मरण विशेषांक हेतु मुझे थाईलैंड प्रवास के दौरान 'सैंच्युरी ऑफ ट्रूथ' की यात्रा वृत्तांत का उल्लेख करना प्रासांगिक प्रतीत हो रहा है।

वर्ष 2024 के जनवरी माह में मुझे अपनी पहली विदेश यात्रा जो 'थाइलैंड' की थी, करने का अवसर प्राप्त हुआ। उस दौरान भारत सरकार ने अपने आस-पास के कुछ देशों में 'पर्यटन' को बढ़ावा देने हेतु 'वीसा' फ्री यात्रा की घोषणा की थी जो कुछ महीनों के लिए ही लागू थी। फिर क्या था हमने थाईलैंड घूमने का प्लान बना लिया क्योंकि मेरी छोटी बहन अपने परिवार के साथ तब उधर ही रहा करती थी।

'पटाया' थाईलैंड के सबसे लोकप्रिय समुद्र तटीय पर्यटन स्थलों में से एक है। वैसे तो वहाँ कई सारे दर्शनीय स्थल हैं पर मुझे जो सबसे सुंदर एवं अद्भुत लगा व जिसे देखकर मेरा दिल कह उठा - ''अद्भुत, अविस्मरणीय, अकल्पनीय'' वो था सैंच्युरी ऑफ ट्रूथ जो कि एक पूरी तरह हस्तनिर्मित भव्य काष्ठ मंदिर व संग्रहालय है। यह अपनी अद्वितीय थाई हस्तशिल्प कला तथा हिन्दु और बौद्ध दर्शन के सुंदर समन्वय के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। इस मंदिर का संपूर्ण निर्माण बिना धातु की कीलों के सिर्फ पांरपरिक तकनीकों का उपयोग करते हुए हाथ से की गई उत्कृष्ट लकड़ी की नक्काशी से किया गया है जो इसे दूसरे किसी भी स्मारक से विशिष्ट बनाता है। इसकी ऊँचाई 105 मीटर है और यह पटाया के समुद्र तट पर स्थित है। इसलिए इसे दुनिया के सबसे बड़े लकड़ी के किले के रूप में भी जाना जाता है। यह इमारत बाहर से देखने में जितनी भव्य एवं खूबसूरत प्रतीत होती है उतनी ही सुंदर एवं अद्भुत यह अंदर से भी दिखती है।

इसके भीतर हजारों उत्कृष्ट लकड़ी की नक्काशियों में मानव जीवन, अध्यात्मिका परिवार व परिवार का महत्व, नैतिक मूल्यों तथा मानव व ब्रह्माण्ड के बीच संबंध जैसे गहन विषयों को दर्शाया गया है। पारंपरिक मंदिर या स्मारक से अलग सैंच्युरी ऑफ ट्रूथ एक दार्शनिक एवं सांस्कृतिक स्मारक के रूप में स्थापित किया गया है। इस पूरे भवन में हिन्दू देवी-देवताओं जैसे सूर्य देव, चन्द्र देव, वायु देव आदि तथा अनेक बौद्ध प्रतिमाओं का अत्यंत सुंदर एवं कलात्मक चित्रण किया गया है। भवन के अंदरूनी दीवारों पर अनेक पौराणिक कथाओं के दृश्यों एवं प्रकृति के प्रतीकात्मक स्वरुपों को भी बड़ी ही खूबसूरती से उकेरा गया है। इस भवन का परिसर भी अत्यंत मनोरम है। आमतौर पर इस पूरे परिसर को देखने में पर्यटकों को 2-3 घंटे का समय लग जाता है। इस दौरान वे लकड़ी पर की गई बारीक एवं अद्भुत



नक्काशियों को देखते व समझते हैं। प्रशिक्षित गाइडों के माध्यम से उन्हें इस स्मारक संग्रहालय के दार्शनिक व सांस्कृतिक महत्ता के बारे में समझाया जाता है। इस भवन के कुछ हिस्से में अभी भी निर्माणकार्य जारी है इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से यहाँ आनेवाले सभी आगंतुको को सुरक्षा हेलमेट प्रदान किये जाते हैं। प्रायः यह पर्यटन स्थल सुबह से लेकर शाम तक शुरू रहता है और पर्यटकों में अति लोकप्रिय होने की वजह से अच्छी खासी भीड़ भी रहती है पर यहाँ घूमने का आनंद ही कुछ और है। यह दक्षिण-पूर्व एशिया की समृद्ध कलात्मक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की व्यापक सोच का प्रतीक है। हस्तनिर्मित लकड़ी की उत्कृष्ट नक्काशी, आध्यात्मिक प्रतीकवाद था पारंपरिक निर्माण तकनीकों पर विशेष बल देने की वजह से यह पटाया के समुद्र तटों और रात्रिकालीन मनोरंजन स्थलों से बिल्कुल अलग पहचान रखता है। यह स्थान पर्यटकों को केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं चिंतनशीलता भी प्रदान करता है। इसलिए मैं थाईलैंड जाने वाले सभी पर्यटकों को यह सलाह देना चाहूँगी कि वो एक बार सैंच्युरी ऑफ ट्रूथ जरूर जाऐं।

❑❑❑



भारत भ्रमण वर्ग पहेली
भारत भ्रमण सुडोकू पहेली

श्रीमती नीरजा टंडन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नियम:- प्रत्येक पंक्ति, प्रत्येक स्तंभ तथा प्रत्येक 33 खंड में प्रत्येक संकेताक्षर केवल एक बार आए।

संकेत सूची-

संकेत	यात्रा स्थल
वा	वाराणसी
ऋ	ऋषिकेश
ज	जबलपुर
अ	अमृतसर
उ	उदयपुर
क	कटक
वै	वैष्णोदेवी
ले	लेह
गो	गोवा

भारत भ्रमण सुडोकू पहेली

	वा						गो	
			वा				अ	ले
वै	क	अ	ले			वा	ऋ	
		वै			अ			
ले	अ	गो	उ		वा		वै	ऋ
	ऋ			वै		अ		वा
			ज	गो				
ऋ	उ	ज	अ		क	गो	ले	वै
गो				ले	उ	ज	वा	अ



भारत भ्रमण वर्ग पहेली

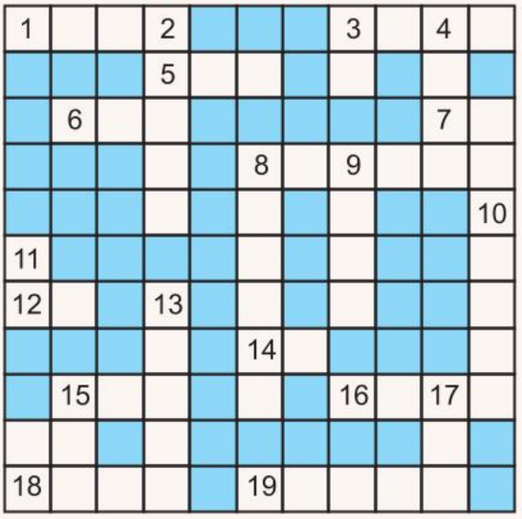

संकेत– बाएँ से दाएँ

1 सबसे लंबी तट रेखा वाला भारतीय राज्य

3 जॉय सिटी (City of Joy) के नाम से मशहूर भारतीय शहर

5 महाराष्ट्र राज्य में स्थित यह शहर अपने संगीत वाद्ययंत्रों (विशेषकर सितार और तानपुरा) के निर्माण और चिकित्सा सुविधाओं के लिए जाना जाता है।

6 भारत की सबसे बड़ी मस्जिद ताज–उल–मस्जिद इस शहर में स्थित है।

7 ओडिशा राज्य में बसा यह शहर हिंदुओं के मूल चार धामों में से एक है।

8 मध्य प्रदेश में स्थित यह शहर मुख्य रूप से भेड़ाघाट के सफेद संगमरमर, धुआंधार जलप्रपात और नर्मदा नदी के घाटों के लिए प्रसिद्ध है।

12 गुजरात के वलसाड जिले में दमनगंगा नदी के तट पर बसा यह शहर रासायनिक उद्योगों (Chemical Industries) के लिए प्रसिद्ध है।

14 यह भारत के जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश का एक खूबसूरत सीमावर्ती शहर है। इसे ''मिनी कश्मीर'' भी कहा जाता है।

15 ताजनगरी के नाम से प्रसिद्ध इस शहर की स्थापना 1504 में सिकंदर लोदी ने की थी।

16 इस राजधानी शहर की स्थापना 18 नवंबर 1727 को आमेर के राजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने की थी।

18 झारखंड राज्य का एक प्रमुख शहर जिसे देश की कोयला राजधानी (कोल कैपिटल) कहा जाता है।

19 हिंदू धार्मिक ग्रंथों का विश्व का सबसे बड़ा प्रकाशक संस्थान गीता प्रेस उत्तर प्रदेश राज्य में राप्ती नदी के किनारे बसे इस शहर में स्थित है।

संकेत– ऊपर से नीचे

2 भारत का सबसे दक्षिणी राज्य जहां मीनाक्षी मंदिर स्थित है

3 चंबल नदी के तट पर स्थित यह शहर राजस्थान का कोचिंग हब कहलाता है

4 ग्रीन पार्क क्रिकेट स्टेडियम वाला शहर

8 भारत के झारखंड राज्य का यह शहर ''स्टील सिटी'' या ''टाटानगर'' के नाम से भी जाना जाता है।

9 गोमती नदी के तट पर बसा यह राजधानी शहर अपनी नजाकत, तहजीब और नवाबों के शहर के रूप में प्रसिद्ध है।

10 राजस्थान के दक्षिणी भाग में अरावली पहाड़ियों से घिरा एक खूबसूरत ऐतिहासिक शहर जो सिटी पैलेस, पिछोला झील, फतेह सागर झील के लिए प्रसिद्ध है ।

11 समुद्र तटों और बीचके लिए मशहूर भारत का पश्चिमी राज्य

13 मूसी नदी के किनारे बसा यह राजधानी शहर देश का चौथा सबसे बड़ा महानगर है, जिसे मोतियों का शहर भी कहते है ।

15 यह शहर ***सोल, पश्चिम बंगाल का दूसरा सबसे बड़ा और प्रमुख औद्योगिक शहर है। इसे ''काले हीरों की भूमि'' भी कहा जाता है।

17 राजस्थान राज्य के अजमेर जिले में स्थित यह शहर भगवान ब्रह्मा के एकमात्र प्रसिद्ध मंदिर के लिए दुनिया भर में जाना जाता है।

❑❑❑





परली वैजनाथ यात्रा

श्रीमती बेबीनंदा आर. ठाकुर
लेखापरीक्षक

अभी सावन का माह चल रहा है। सावन का मतलब हरियाली, सुनहरा मौसम और सबसे महत्वपूर्ण भगवान भोलेनाथजी की पूजा का माह है, इसलिए परली वैजनाथ की यात्रा की याद आयी।

कुछ समय पहले मैं अपने परिवार के साथ परली वैजनाथ घुमने गई थी। वहाँ जाने की मेरी बहुत इच्छा थी। जब जाने का कार्यक्रम बना तब मुझे बहुत खुशी हुई।

जब हम लोग नागपुर से रेलवे से परली वैजनाथ पहुँचे, वहाँ हमें रेलवेस्टेशन के बाहर बहुत बड़ी आकार की भगवान भोलेनाथ की मूर्ति दिखी। ऐसा लग रहा था साक्षात भोलेनाथ खड़े हो ऐसी जीवन्त मुर्ति लग रही थी। वहाँ से हमलोग परली वैजनाथ धाम पहुँचे। जाते समय रास्ते में हरे-भरे खेत, हरे-भरे पेड़ देखकर मन मोहित हो गया।

परली पहुँचने के बाद हम सब पहले वैजनाथ मंदिर गए। मंदिर में भगवान के दर्शन किए, भोलेनाथ जी की पूजा की, मंदिर में जाकर हम सबको बहुत शांति-सुकून महसूस हुई और मन उत्साहित हुआ।

परली वैजनाथ के बारे में पौराणिक कथाएँ हैं। कहा जाता है कि, रावण भगवान शिवजी से शिवलिंग को अपने साथ ले जाने का वरदान चाहते थे। पौराणिक मान्यता के अनुसार रावण भगवान शिव का बहुत बड़ा भक्त था। रावण ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उसे दर्शन दिया। भगवान शिव ने उसे शिवलिंग दिया, लेकिन यह शर्त रखी कि रास्ते में शिवलिंग को भूमि पर नहीं रखना है। यात्रा के दौरान एक स्थान पर रावण को शिवलिंग कुछ समय के लिए दूसरे व्यक्ति को देना पड़ा और उसने शिवलिंग भूमि पर रख दिया। भूमि पर रखते ही शिवलिंग वहीं स्थापित हो गया।

रावण ने उसे उठाने का बहुत प्रयास किया लेकिन वह शिवलिंग को हिला नहीं सका। इसी पवित्र स्थान को परली वैजनाथ से जोड़ा जाता है। इसलिए यह स्थान भगवान शिव के भक्तों के लिए अत्यंत श्रद्धा का केन्द्र है।

''परली वैजनाथ को भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में एक माना जाता है।''

परली वैजनाथ में प्राचीन वास्तुकला और संस्कृति देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। हमने आसपास के सुंदर स्थानों को देखा और यादगार तस्वीर भी लीं।

पर्यटन हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पर्यटन से हमें नई जगहों को देखने, वहाँ की संस्कृति और इतिहास को जानने तथा प्रकृति के सौंदर्य का आनंद लेने का अवसर मिलता है। इस यात्रा से मुझे यह सीख मिली कि पर्यटन केवल घुमने-फिरने का साधन नहीं है। इससे हमारा ज्ञान बढ़ता है और हमें अपनी संस्कृति, इतिहास तथा प्रकृति को समझने का अवसर मिलता है।

❑❑❑





मेरी बनारस यात्रा

श्री घनश्याम
डी.ई.ओ. (ग्रेड-बी)

पिछले साल मुझे अपने परिवार के साथ बनारस जाने का मौका मिला। इस यात्रा में मेरी पत्नी, मेरे दो बच्चे और मेरे माता-पिता भी मेरे साथ थे। काफी समय से हम सब कहीं घूमने जाने की सोच रहे थे, लेकिन किसी न किसी कारण से बात नहीं बन पा रही थी। एक दिन मैंने अचानक कहा कि क्यों न हम सब बनारस चलते हैं। मेरे माता-पिता बनारस जाने की बात सुनकर बहुत खुश हुए, क्योंकि वे पहले से ही वहाँ जाने की इच्छा रखते थे। बच्चों ने जैसे ही सुना कि हम ट्रेन से एक नए शहर में जाने वाले हैं, वे बहुत खुश हो गए। इसके बाद हमने जल्दी-जल्दी यात्रा की तैयारी शुरू कर दी।

यात्रा वाले दिन हम सुबह जल्दी उठ गए। घर में उस दिन से ही अलग तरह की खुशी थी। मेरी पत्नी बच्चों को तैयार कर रही थी और मैं सामान चेक कर रहा था कि कुछ छूट तो नहीं गया। मेरी मां बच्चों के लिए खाने का सामान रख रही थीं और मेरे पिता बार-बार ट्रेन के समय के बारे में पूछ रहे थे। आखिर में हम सभी स्टेशन पहुंच गए। ट्रेन में बैठते ही बच्चों ने खिड़की वाली सीट के लिए जिद शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद दोनों बच्चे खिड़की के पास बैठकर बाहर के पेड़, खेत और छोटे-छोटे गांव देखने लगे। मेरी मां घर से बने पराठे और अचार लाई थीं। हम सबने मिलकर खाना खाया और रास्ते में खूब बातें कीं। रात को बच्चे सो गए, लेकिन मैं और मेरे पिता काफी देर तक यात्रा और बनारस के बारे में बात करते रहे। मुझे अंदर से बहुत खुशी हो रही थी कि इतने समय बाद पूरा परिवार एक साथ यात्रा कर रहा था।

जब हम बनारस पहुंचे तो स्टेशन से बाहर निकलते ही मुझे लगा कि यह शहर बाकी शहरों से कुछ अलग है। चारों तरफ लोगों की भीड़, छोटी-छोटी दुकानें, मंदिरों की घंटियों की आवाज और गलियों में चलते लोग दिखाई दे रहे थे। हम अपने होटल पहुंचे, थोड़ा आराम किया और शाम को बाहर घूमने निकल गए। बनारस की गलियां मुझे सबसे ज्यादा अच्छी लगीं। कई जगह रास्ता इतना छोटा था कि दो लोग ही आराम से निकल सकते थे। बच्चे इन गलियों को देखकर बहुत खुश थे और बार-बार पूछ रहे थे कि पापा हम कहाँ जा रहे हैं। चलते-चलते हमें कई छोटी दुकानें मिलीं, जहां मिठाई, कचौड़ी, चाय और बनारसी सामान मिल रहा था। हमने वहां गरम कचौड़ी और जलेबी खाई। बच्चों को जलेबी इतनी पसंद आई कि उन्होंने दोबारा लेने की जिद कर दी। उस समय हम सब हंसने लगे।

अगली सुबह हम बहुत जल्दी गंगा घाट जाने के लिए तैयार हो गए। मेरे माता-पिता की खास इच्छा थी कि वे सुबह गंगा जी के दर्शन करें। जब हम घाट पर पहुंचे तो सुबह का समय था और हल्की ठंडी हवा चल रही थी। गंगा के किनारे बहुत से लोग बैठे हुए थे। कुछ लोग पूजा कर रहे थे और कुछ लोग नाव में घूम रहे थे। सूरज धीरे-धीरे निकल रहा था और उसकी रोशनी गंगा के पानी पर पड़ रही थी। वह दृश्य



इतना सुंदर था कि कुछ समय के लिए मैं चुप होकर बस उसे देखता रहा। मेरी मां ने हाथ जोड़कर गंगा जी को प्रणाम किया और मेरे पिता काफी देर तक घाट की सीढ़ियों पर बैठे रहे। बच्चों ने भी गंगा के बारे में कई सवाल पूछे। हमने एक नाव भी किराए पर ली और थोड़ी देर गंगा में घूमें। नाव से बनारस के घाटों को देखना मेरे लिए इस पूरी यात्रा का सबसे अच्छा हिस्सा था। मेरे छोटे बेटे ने पानी में हाथ डालने की कोशिश की तो मैंने उसे रोक दिया, लेकिन उसकी शरारत देखकर हम सब हँसने लगे।

इसके बाद हम काशी विश्वनाथ मंदिर गए। मंदिर में काफी भीड़ थी, इसलिए थोड़ा समय लगा, लेकिन दर्शन होने के बाद मन को बहुत अच्छा लगा। मेरे माता-पिता के चेहरे पर बहुत संतोष था। मेरी पत्नी बच्चों को मंदिर और वहां की बातों के बारे में समझा रही थी। बच्चों ने भी बहुत ध्यान से सब देखा। वहां से निकलने के बाद हमने आसपास का बाजार देखा और कुछ सामान खरीदा। मैंने अपने माता-पिता के लिए भी कुछ चीजें खरीदीं। शाम को हम फिर गंगा घाट पहुंचे, क्योंकि हमें गंगा आरती देखनी थी। जैसे-जैसे शाम होने लगी, घाट पर लोगों की भीड़ बढ़ती गई। आरती शुरू हुई तो घंटियों और मंत्रों की आवाज से पूरा घाट जैसे एक अलग ही जगह लग रहा था। चारों तरफ दीपक की रोशनी दिखाई दे रही थी। मेरी मां की आंखों में खुशी थी और मेरे पिता चुपचाप आरती देख रहे थे। मेरी पत्नी बच्चों को अपने पास बैठाकर उन्हें सब समझा रही थी। उस समय मुझे लगा कि परिवार के साथ इस तरह का समय बिताना ही असली खुशी है।

बनारस की यात्रा में हमने वहाँ का खाना भी खूब खाया। सुबह कचौड़ी-जलेबी, दिन में अलग-अलग तरह का खाना और शाम को चाय और मिठाई। बच्चों को बनारस की मिठाई बहुत पसंद आई। एक दिन हमने बनारसी पान भी देखा। मैंने पान खाया तो उसका स्वाद मेरे लिए थोड़ा नया था। मेरे पिता ने मजाक करते हुए कहा कि बनारस आकर पान नहीं खाया तो यात्रा अधूरी है। उनकी बात सुनकर हम सब हंसने लगे। हमने बाजार से कुछ छोटी चीजें खरीदीं और बच्चों के लिए खिलौने भी लिए। घूमते हुए कई बार हम रास्ता भूल गए, लेकिन यही बात बाद में हमारी यात्रा की मजेदार याद बन गई।

तीन दिन बहुत जल्दी निकल गए। जब वापस जाने का समय आया तो बच्चों ने कहा कि हमें अभी और रुकना है। मेरी मां भी कह रही थीं कि काश एक-दो दिन और मिल जाते। मुझे भी वापस जाने का मन नहीं था। स्टेशन जाते समय मैं रास्ते में बनारस की गलियों को आखिरी बार देख रहा था। मेरे मन में यही बात चल रही थी कि यह यात्रा सिर्फ एक शहर घूमने की यात्रा नहीं थी। इस यात्रा में हमने साथ बैठकर खाना खाया, साथ हँसे, साथ घूमे और बहुत सारी छोटी-छोटी यादें बनाई। सबसे अच्छी बात यह थी कि मेरे माता-पिता, पत्नी और दोनों बच्चे सभी मेरे साथ थे। घर वापस आने के बाद भी कई दिनों तक हम बनारस की बातें करते रहे। बच्चे अपनी पसंद की जगहों के बारे में बताते थे और मेरे माता-पिता गंगा घाट और मंदिर की बातें करते थे। आज भी जब मैं बनारस के बारे में सोचता हूँ तो मुझे गंगा घाट, शाम की आरती, बनारस की गलियां और अपने पूरे परिवार के साथ बिताए हुए वे दिन याद आते हैं। मेरे लिए बनारस की यह यात्रा हमेशा खास रहेगी और मैं उम्मीद करता हूँ कि एक दिन हम सब फिर से वहां जाएंगे।

❑❑❑





काशी विश्वनाथ मंदिर की यात्रा और मेरा अनुभव

सुश्री प्रियंका कुमारी
लेखापरीक्षक

भारत को धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध देश माना जाता है। यहाँ अनेक पवित्र तीर्थस्थल हैं, जिनमें काशी विश्वनाथ मंदिर का विशेष स्थान है। हाल ही में मुझे वाराणसी स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर जाने का अवसर मिला। यह यात्रा मेरे जीवन के सबसे यादगार और आध्यात्मिक अनुभवों में से एक रही। इस यात्रा ने मुझे न केवल धार्मिक शांति प्रदान की, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं को भी निकट से देखने का अवसर दिया।

मैं अपने परिवार के साथ वाराणसी पहुँची। वाराणसी को दुनिया के सबसे प्राचीन शहरों में से एक माना जाता है। जैसे ही हमने शहर में प्रवेश किया, वहाँ का धार्मिक वातावरण और गंगा नदी के किनारे बसे घाटों की सुंदरता देखकर मन प्रसन्न हो गया। चारों ओर श्रद्धालुओं की भीड़, मंदिरों की घंटियाँ और भक्ति संगीत सुनाई दे रहा था। पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भरा हुआ था।

अगले दिन सुबह हम काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन के लिए गए। मंदिर परिसर में सुरक्षा की अच्छी व्यवस्था थी। दर्शन के लिए लंबी कतार लगी हुई थी, लेकिन श्रद्धालुओं में अपार उत्साह दिखाई दे रहा था। कतार में खड़े होकर हम भगवान शिव के जयकारे लगा रहे थे। कुछ समय बाद हमें गर्भगृह के निकट पहुँचने का अवसर मिला। जैसे ही मैंने बाबा विश्वनाथ के ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए, मेरे मन को अद्भुत शांति और संतोष की अनुभूति हुई। मैंने भगवान शिव से अपने परिवार की सुख-समृद्धि और अच्छे स्वास्थ्य की प्रार्थना की।

मंदिर की वास्तुकला अत्यंत आकर्षक है। इसके स्वर्णिम शिखर दूर से ही श्रद्धालुओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मंदिर परिसर स्वच्छ और व्यवस्थित था। वहाँ उपस्थित पुजारियों और कर्मचारियों का व्यवहार भी बहुत अच्छा था। दर्शन के बाद मैंने मंदिर परिसर में कुछ समय बिताया और वहाँ के धार्मिक वातावरण का आनंद लिया।

मंदिर दर्शन के बाद हम गंगा घाट की ओर गए। गंगा नदी का शांत और पवित्र दृश्य मन को बहुत सुकून देता है। हमने नाव की सवारी की और विभिन्न घाटों को देखा। मुझे वाराणसी के मणिकर्णिका घाट जाने का अवसर मिला। यह घाट भारत के सबसे प्राचीन और पवित्र घाटों में से एक माना जाता है। वहाँ का वातावरण आध्यात्मिकता और जीवन के गहरे सत्य का अनुभव कराता है। गंगा नदी के



किनारे स्थित यह स्थान हिंदू धर्म में मोक्ष प्राप्ति से जुड़ा हुआ है। घाट पर निरंतर होने वाले अंतिम संस्कार जीवन और मृत्यु के चक्र की याद दिलाते हैं। मणिकर्णिका घाट की यात्रा मेरे लिए एक अनूठा और विचारोत्तेजक अनुभव रहा, जिसने मुझे जीवन के महत्व को और अधिक समझने में मदद की। शाम के समय हमने प्रसिद्ध गंगा आरती भी देखी। आरती का दृश्य अत्यंत मनमोहक था। सैकड़ों दीपकों की रोशनी, मंत्रोच्चार और घंटियों की ध्वनि ने वातावरण को और भी दिव्य बना दिया। यह अनुभव मेरे लिए अविस्मरणीय रहा।

वाराणसी की यात्रा भोजन के बिना अधूरी मानी जाती है। इसलिए हमने वहाँ के प्रसिद्ध बनारसी व्यंजनों का भी स्वाद लिया। सबसे पहले मैंने प्रसिद्ध बनारसी लस्सी पी। मिट्टी के कुल्हड़ में परोसी गई ठंडी और गाढ़ी लस्सी का स्वाद बहुत ही लाजवाब था। उसके ऊपर मलाई और सूखे मेवे डाले गए थे, जिससे उसका स्वाद और भी बढ़ गया। गर्म मौसम में यह लस्सी पीकर बहुत ताजगी महसूस हुई।

इसके बाद मैंने प्रसिद्ध बनारसी पान खाया। बनारसी पान पूरे भारत में अपनी विशेष पहचान रखता है। पान की दुकान पर कई प्रकार के पान उपलब्ध थे। मैंने मीठा बनारसी पान चुना। उसका स्वाद बेहद अनोखा और स्वादिष्ट था। पान में डाली गई विभिन्न सामग्रियों ने उसे और भी खास बना दिया। पान खाने के बाद मुझे समझ आया कि आखिर बनारसी पान इतना प्रसिद्ध क्यों है।

इस यात्रा के दौरान मैंने वाराणसी की संकरी गलियों, स्थानीय बाजारों और लोगों की सरल जीवनशैली को भी देखा। यहाँ के लोग बहुत विनम्र और अतिथि-सत्कार करने वाले होते हैं। शहर की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत हर किसी को आकर्षित करती है। मैंने वहाँ से कुछ स्मृति-चिह्न भी खरीदें, जो मुझे इस सुंदर यात्रा की याद दिलाते रहेंगे।

अंत में, काशी विश्वनाथ मंदिर की मेरी यात्रा अत्यंत सुखद, प्रेरणादायक और आध्यात्मिक अनुभव से भरपूर रही। भगवान शिव के दर्शन, गंगा आरती का अद्भुत दृश्य, बनारसी लस्सी और पान का स्वाद तथा वाराणसी की सांस्कृतिक सुंदरता ने मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ी। यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक है। यदि भविष्य में अवसर मिला, तो मैं अवश्य पुनः काशी विश्वनाथ मंदिर और वाराणसी की यात्रा करना चाहूँगी।

❑❑❑





नागपुर से दौसा की यात्रा - एक अविस्मरणीय अनुभव

सुश्री नारंगी मीणा
स.ले.प.अ.

यात्रा मनुष्य के जीवन का एक ऐसा अनुभव है, जो उसे नई जगहों, नए लोगों और नई संस्कृतियों से परिचित कराती है। यात्रा के दौरान मिलने वाले अनुभव जीवनभर की यादों का हिस्सा बन जाते हैं। ऐसी ही एक यादगार यात्रा का अनुभव मैं यहाँ साझा कर रही हूँ।मनुष्य के जीवन में यात्रा केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने का माध्यम नहीं होती, बल्कि यह नए अनुभवों, नई संस्कृतियों और नई यादों से परिचित होने का अवसर भी प्रदान करती है। प्रत्येक यात्रा अपने साथ कुछ न कुछ नया सिखाती है और जीवन की स्मृतियों में एक नया अध्याय जोड़ती है। यह यात्रा मैंने वर्ष 2018 में नागपुर से दौसा (राजस्थान) के लिए की थी। इस यात्रा का सबसे बड़ा आकर्षण था--- अपने पैतृक स्थान और परिवार से मिलने की खुशी।

नियुक्ति के बाद यह मेरी पहली राखी थी। नागपुर आए मुझे लगभग पाँच महीने हो चुके थे और मैं बेसब्री से अगस्त महीने में आने वाली राखी का इंतजार कर रही थी। मन में बार-बार यही विचार आता था कि कब राखी आए और मैं अपने घर जाऊँ। घर जाने की उत्सुकता इतनी अधिक थी कि मैंने लगभग एक महीने पहले ही टिकट बुक करवा लिया था, क्योंकि अंतिम समय में टिकट मिलना काफी मुश्किल होता है। मेरा गंतव्य जयपुर था, जहाँ से आगे मुझे बस द्वारा दौसा पहुँचना था।

यात्रा की तैयारी

घर जाने की तैयारी अपने आप में मेरे लिए एक सुखद अनुभव थी। यात्रा के लिए कपड़े और आवश्यक सामान रखने के साथ-साथ सबसे महत्वपूर्ण काम था घर से खाना तैयार करके ले जाना। मुझे ट्रेन में मिलने वाला खाना विशेष पसंद नहीं है, इसलिए मैं हमेशा सफर के लिए घर से टिफिन लेकर चलती हूँ। इस बार भी मैंने पराठे, आलू की सब्जी और सबसे जरूरी चीज अचार टिफिन में रखा। सफर के दौरान पराठे और आलू की सब्जी के साथ अचार खाने का आनंद ही कुछ और होता है। शायद घर के खाने का स्वाद यात्रा की खुशी को और भी बढ़ा देता है।

मेरी यात्रा लगभग 900 किलोमीटर की थी और इसका अधिकांश हिस्सा रेलमार्ग से पूरा होना था। मन में घर पहुँचने की खुशी थी और इसलिए इतनी लंबी यात्रा भी मुझे बिल्कुल कठिन नहीं लग रही थी। बल्कि हर गुजरते पल के साथ घर पहुँचने की उत्सुकता और बढ़ती जा रही थी।

नागपुर रेलवे स्टेशन से यात्रा का आरंभ

मेरी यात्रा नागपुर रेलवे स्टेशन से शुरू हुई। लगभग 11 बजे का ट्रेन का समय था पर घर जाने की खुशी मे मैं 10 बजे ही स्टेशन पहुच गई । सुबह-सुबह रेलवे स्टेशन का वातावरण अत्यंत जीवंत और उत्साहपूर्ण था। कहीं यात्री



अपने सामान के साथ प्लेटफॉर्म पर ट्रेन का इंतजार कर रहे थे, तो कहीं चाय और नाश्ते की दुकानों पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी। स्टेशन पर होने वाली घोषणाएँ, यात्रियों की चहल-पहल और आने-जाने वाली ट्रेनों की आवाजें वातावरण को और भी जीवंत बना रही थीं।

कुछ समय बाद मेरी ट्रेन प्लेटफॉर्म नं. 1 पर आ गई। मैं अपना सामान लेकर अपनी निर्धारित सीट पर बैठ गई । ट्रेन के चलने का इंतजार करते हुए मन में एक अलग ही उत्सुकता थी। थोड़ी देर बाद ट्रेन ने अपनी मधुर सीटी के साथ धीरे-धीरे गति पकड़ ली और हमारी यात्रा वास्तव में शुरू हो गई।

नागपुर शहर से बाहर निकलते ही खिड़की से दिखाई देने वाले प्राकृतिक दृश्य मन को मोह लेने वाले थे। दूर-दूर तक फैले हरे-भरे खेत, पेड़ों की कतारें और छोटे-छोटे गाँव यात्रा को आनंददायक बना रहे थे। वर्षा ऋतु का समय होने के कारण प्रकृति ने मानो हरी चादर ओढ़ रखी थी। खेतों में किसान अपने कार्यों में व्यस्त दिखाई दे रहे थे। कहीं धान की फसल लहलहा रही थी, तो कहीं कपास और सोयाबीन की फसलें हवा के साथ झूमती हुई प्रतीत हो रही थीं। इन दृश्यों को देखते हुए ऐसा लग रहा था जैसे प्रकृति स्वयं हमारे साथ यात्रा कर रही हो।

सहयात्रियों से मुलाकात

यात्रा की एक खास बात यह भी रही कि हमारे डिब्बे में नागपुर से ही एक बड़ा समूह हमारे साथ सवार हुआ। यह लगभग नौ-दस लोगों का समूह था, जिसमें चार महिलाएँ, चार पुरुष और दो बच्चे थे। बातचीत शुरू होने पर पता चला कि उनमें से कुछ लोग नागपुर में रहते थे, जबकि एक परिवार मध्य प्रदेश से था। समूह में शामिल एक परिवार के पूर्वज राजस्थान से थे, जो लगभग 40 वर्ष पहले रोजगार और व्यवसाय की तलाश में नागपुर आए थे और बाद में वहीं बस गए। हालांकि राजस्थान से उनका संबंध आज भी बना हुआ था और वे समय-समय पर वहाँ आते-जाते रहते थे। अब मुझे जयपुर तक साथ मिल चुका था।

इस बार वे सभी खाटू श्यामजी के दर्शन के लिए राजस्थान जा रहे थे। खाटू श्यामजी राजस्थान के सीकर जिले में स्थित एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। उनसे बातचीत करते-करते ऐसा लगा जैसे हम एक-दूसरे को काफी समय से जानते हों। यात्राएँ शायद इसी कारण विशेष होती हैं कि वे कुछ घंटों के लिए ही सही, अनजान लोगों को भी एक-दूसरे के करीब ले आती हैं।

हमने अपने परिवार, घर, राजस्थान और यात्रा के बारे में एक-दूसरे से बातें कीं। उनकी बातचीत में राजस्थान के प्रति लगाव साफ दिखाई दे रहा था। उनकी यात्रा का उद्देश्य धार्मिक था, जबकि मेरी यात्रा का उद्देश्य अपने घर और परिवार तक पहुँचना था, लेकिन दोनों की यात्राओं में उत्साह और खुशी समान थी।

रास्ते का भोजन और अपनापन

दोपहर के समय ट्रेन मध्य प्रदेश के विभिन्न शहरों और रेलवे स्टेशनों से होकर गुजर रही थी। रास्ते में बड़े-बड़े रेलवे स्टेशन, नदियाँ और पुल दिखाई दे रहे थे जो इस यात्रा को ओर भी रोचक बना रहे थे। प्रत्येक स्टेशन की अपनी अलग पहचान थी। कहीं स्थानीय व्यंजन बिक



रहे थे, तो कहीं प्रसिद्ध नमकीन और मिठाइयों की दुकानें यात्रियों को आकर्षित कर रही थीं।

हालाँकि मुझे बाहर का खाना कम पसंद है, इसलिए मैं आमतौर पर उसे खाने से बचती हूँ। लेकिन मेरे सहयात्रियों ने इटारसी रेलवे स्टेशन पर गरमा-गरम पोहा, कचौरी और चाय का स्वाद लिया। स्टेशन पर कुछ देर रुककर स्थानीय व्यंजन का स्वाद लेना भी यात्रा का एक अलग आनंद था। इससे उस स्थान के खान-पान और संस्कृति को करीब से महसूस करने का अवसर मिलता है।

शाम के समय मैंने अपने घर से लाया हुआ खाना निकाला। मेरे साथ यात्रा कर रहे खाटू श्यामजी जाने वाले समूह ने भी खाना शुरू किया। उन्होंने हमारे साथ अपना खाना साझा किया और मैंने भी अपने टिफिन का खाना उनके साथ बाँटा। अलग-अलग घरों के व्यंजन एक-दूसरे के साथ बाँटकर खाना इस यात्रा का एक बहुत ही सुंदर अनुभव था। बिना किसी औपचारिकता के भोजन साझा करने से हमारे बीच अपनापन और बढ़ गया।

खाना खाने के बाद सभी ने मिलकर अंत्याक्षरी और हाउजी खेला। शुरुआत में लगा कि थोड़ी देर खेलेंगे, लेकिन खेल में सभी इतने रम गए कि समय बीतने का पता ही नहीं चला। कभी किसी की हँसी सुनाई देती, तो कभी कोई अंत्याक्षरी में अपनी पसंद का गीत गाने लगता। हाउजी के दौरान भी सभी पूरे उत्साह से नंबर सुन रहे थे। उस समय डिब्बे का वातावरण बिल्कुल पारिवारिक-सा हो गया था।

यात्रा में मिले उन अनजान लोगों के साथ इस तरह हँसना, खाना साझा करना और खेलना मेरे लिए इस सफर की सबसे प्यारी यादों में से एक बन गया। उस समय महसूस हुआ कि यात्रा केवल स्थानों को जोड़ने का काम नहीं करती, बल्कि अपनापन भी महसूस करवाती है।

राजस्थान की ओर बढ़ती ट्रेन

जैसे-जैसे ट्रेन राजस्थान की ओर बढ़ने लगी, वैसे-वैसे बाहर के प्राकृतिक दृश्य भी बदलने लगे। अब मन में यह एहसास होने लगा था कि हम अपने घर के और करीब पहुँच रहे हैं। मेरी उत्सुकता लगातार बढ़ती जा रही थी। हर गुजरते स्टेशन के साथ लगता था कि अब घर पहुँचने का समय और करीब आ गया है।

रात्रि में ट्रेन अपनी गति से आगे बढ़ती रही। खिड़की से बाहर अंधेरे में कभी-कभी गाँवों की टिमटिमाती रोशनी दिखाई देती थी। दिनभर की बातचीत, हँसी-मजाक और यात्रा की थकान के बाद धीरे-धीरे सभी यात्री विश्राम करने लगे। मैंने भी सोने की कोशिश की, लेकिन मन में घर पहुँचने की उत्सुकता इतनी अधिक थी कि नींद बार-बार खुल जाती थी।

सुबह के लगभग चार बज चुके थे और ट्रेन सवाई माधोपुर स्टेशन पहुँच चुकी थी।स्टेशन पर कुछ यात्री अपना सामान लेकर उतर रहे थे, क्योंकि उनकी यात्रा वहीं तक थी। यात्रियों की आवाजाही और सामान उठाने की हलचल से मेरी नींद खुल गई। इसके बाद घर पहुँचने की उत्सुकता ने मुझे दोबारा सोने ही नहीं दिया।

बाहर सुबह की ठंडी हवा महसूस हो रही थी। धीरे-धीरे आसमान में हल्की लालिमा



दिखाई देने लगी और अंधेरा कम होने लगा। जैसे-जैसे उजाला बढ़ा, राजस्थान का प्राकृतिक सौंदर्य भी स्पष्ट दिखाई देने लगा। वर्षा ऋतु होने के कारण इस समय राजस्थान में भी चारों ओर हरियाली दिखाई दे रही थी।

धीरे-धीरे प्राकृतिक वातावरण में परिवर्तन स्पष्ट होने लगा। हरे-भरे खेतों के साथ खुले मैदान, बबूल और कीकर के पेड़ तथा पारंपरिक राजस्थानी घर दिखाई देने लगे। लोगों की वेशभूषा में भी राजस्थान की संस्कृति की झलक दिखाई दे रही थी। पुरुष रंग-बिरंगी पगड़ियाँ पहने हुए थे और महिलाएँ घाघरा-ओढ़नी में अत्यंत सुंदर लग रही थीं।

हर दृश्य मुझे मेरे अपने प्रदेश, अपने गाँव और बचपन की यादों के और करीब ले जा रहा था। अब ऐसा लग रहा था कि घर मुझसे ज्यादा दूर नहीं है।

जयपुर पहुँचने की खुशी

अब जयपुर तक की यात्रा का कुछ ही हिस्सा बाकी था। सवाई माधोपुर से जयपुर पहुँचने में सामान्यतः तीन घंटे लगते हैं, लेकिन हमारी ट्रेन लगभग एक घंटे लेट चल रही थी। आखिरकार करीब सुबह आठ बजे ट्रेन जयपुर पहुँची।

तब तक सभी यात्री जाग चुके थे और अपना सामान पैक कर चुके थे। जैसे ही ट्रेन जयपुर स्टेशन पर पहुँची, मेरी नजर सबसे पहले अपने पापा को खोजने लगी। वे हमें लेने के लिए पहले से ही स्टेशन पर मौजूद थे। उन्हें वहाँ देखकर मन खुशी से भर गया। इतने महीनों बाद अपने पापा को सामने देखकर ऐसा लगा जैसे यात्रा की सारी थकान उसी क्षण समाप्त हो गई हो।

जयपुर रेलवे स्टेशन की चहल-पहल, यात्रियों की आवाजाही और स्थानीय वातावरण ने भी मेरा ध्यान आकर्षित किया। लेकिन इन सबके बीच मेरा ध्यान केवल इस बात पर था कि अब मैं अपने घर से कुछ ही दूरी पर हूँ। इतने महीनों से जिस पल का इंतजार था, वह अब सच हो चुका था।

जयपुर से दौसा तक का सफर

जयपुर से दौसा की यात्रा अपेक्षाकृत छोटी थी। हमने आगे का सफर बस से तय किया। बस जैसे-जैसे दौसा की ओर बढ़ रही थी, मेरे मन में घर पहुँचने की खुशी और उत्सुकता बढ़ती जा रही थी।

रास्ते में अरावली पर्वतमाला की दूर-दूर तक फैली पहाड़ियाँ, छोटे-छोटे गाँव, मंदिर और खेत दिखाई देते रहे। रास्ते भर मैं और मेरे पापा बातें करते रहे। इतने दिनों बाद परिवार के किसी सदस्य के साथ बैठकर बातें करना अपने आप में बहुत सुखद अनुभव था। बातों-बातों में कब जयपुर से दौसा का रास्ता समाप्त हो गया, पता ही नहीं चला।

अंत मे हम दौसा अपने घर पहुँच गए। अपने पैतृक स्थान पर पहुँचते ही मन में एक अलग ही प्रकार की शांति और खुशी का अनुभव हुआ। परिवार के सदस्यों से मिलते ही लंबी यात्रा की सारी थकान पलभर में समाप्त हो गई। घर पहुँचने की खुशी किसी भी यात्रा की सबसे बड़ी मंजिल होती है और मेरे लिए इस यात्रा में वह खुशी कई गुना अधिक थी, क्योंकि



नागपुर सेवानियुक्ति के बाद यह मेरी पहली यात्रा थी घर के लिए।

कई महीनों बाद अपने घर के आँगन में कदम रखते समय मन में एक अजीब-सी भावुकता थी। लगा जैसे मैं केवल एक शहर से दूसरे शहर नहीं आई हूँ, बल्कि अपने अतीत, अपनी यादों और अपनी जड़ों के पास वापस लौटी हूँ।

यात्रा से मिली सीख

इस पूरी यात्रा ने मुझे यह अनुभव कराया कि भारत की वास्तविक पहचान उसकी विविधता में एकता में निहित है। अलग-अलग राज्यों की भाषा, वेशभूषा, खान-पान और संस्कृति भले ही अलग हों, लेकिन लोगों के बीच प्रेम, अपनापन और अतिथि-सत्कार की भावना लगभग समान है।

ट्रेन में मिले वे सहयात्री, जिनसे कुछ घंटे पहले तक मेरा कोई परिचय नहीं था, यात्रा समाप्त होने तक मेरे लिए परिचित और अपने जैसे लगने लगे थे। भोजन साझा करना, एक-दूसरे की बातें सुनना, अंताक्षरी और हाउजी खेलना तथा साथ में हँसी-मजाक करना इस यात्रा की सबसे खूबसूरत यादों में शामिल हो गया।

यात्रा हमें केवल नई जगहों को देखने का अवसर नहीं देती, बल्कि यह हमारे दृष्टिकोण को भी व्यापक बनाती है। अलग-अलग लोगों से मिलने और उनकी जीवनशैली को समझने से हमें जीवन के अनेक पहलुओं को नए तरीके से देखने का अवसर मिलता है। यात्रा हमारे भीतर धैर्य, आत्मविश्वास और परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने की क्षमता भी विकसित करती है।

अंततः मैं यही कहना चाहूँगी कि नागपुर से दौसा की यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे सुखद, शिक्षाप्रद और अविस्मरणीय यात्राओं में से एक रही।सहयात्रियों से मिला अपनापन और परिवार से मिलने की खुशी ने इसे और भी विशेष बना दिया।

आज भी जब मैं उस यात्रा को याद करती हूँ, तो रेल की खिड़की से दिखाई देने वाले हरे-भरे खेत, इटारसी स्टेशन पर पोहा और कचौरी की खुशबू, सहयात्रियों के साथ साझा किया गया भोजन, अंताक्षरी और हाउजी के दौरान हुई हँसी-मजाक, सुबह चार बजे माधोपुर स्टेशन की हलचल, राजस्थान की सुबह की हरियाली, जयपुर स्टेशन पर पापा का इंतजार करना और अंततः अपने घर पहुँचने की खुशी--- सब कुछ आँखों के सामने जीवंत हो उठता है।

वह यात्रा मेरे लिए केवल लगभग 900 किलोमीटर का सफर नहीं थी, बल्कि अपने घर, अपने परिवार और अपनी जड़ों की ओर लौटने की एक भावनात्मक यात्रा थी। शायद इसी कारण उस यात्रा का हर छोटा-बड़ा अनुभव आज भी मेरे मन में उतनी ही ताजगी के साथ मौजूद है।

समय बीत गया, जीवन आगे बढ़ गया, लेकिन उस यात्रा की यादें आज भी मेरे साथ हैं। जब भी घर से दूर होने का एहसास होता है, उस यात्रा की याद मन में एक मीठी-सी खुशी भर देती है। यही कारण है कि नागपुर से दौसा की यह यात्रा आज भी मेरी स्मृतियों में एक अत्यंत मधुर, भावनात्मक और अविस्मरणीय अनुभव के रूप में अंकित है।

❑❑❑





मेरी माँ वैष्णो देवी यात्रा

श्रीमती शिवानी सक्सेना
पत्नी श्री मुकेश तेजबहादुर सक्सेना
स.ले.प.अ.

माँ वैष्णो देवी यात्रा का यह संस्मरण एक बहुत ही सुखद और आध्यात्मिक अनुभव के साथ प्रेम और सौहार्दता से परिपूर्ण है।

बात तब की है जब मेरी आयु 4 साल की थी। दूसरों के छोटे भाई या बहिन देखकर मुझे अपना छोटा भाई या बहिन चाहिए था और मैंने अपने माता-पिता को परेशान कर दिया था। मेरा रो-रो कर बुरा हाल था। मेरी माताजी ने कोई उपाय न देखकर, मेरे लिए एक बड़ा सा कपड़े का गुड्डा बना दिया। उसको मेरे छोटे कपड़े, मोजे, टोपी और दस्ताने पहना दिये। मेरा पूरा समय अब उसी के साथ खेलने मे व्यतीत होने लगा। कुछ समय बाद माँ वैष्णो देवी की कृपा से मुझे एक छोटी बहिन हुई।

जब वो एक वर्ष की हुई तब मेरे माता-पिता ने हम दोनों बहिनों को लेकर माँ वैष्णो देवी यात्रा के लिए योजना बनाई। हम पूरे परिवार सहित रेलगाड़ी की 22 घंटे की लंबी यात्रा करके जम्मू कश्मीर पहुँचे। वहाँ से बस द्वारा कटरा पहुँचे। रास्ते में पहाड़ों, घाटियों एवं वृक्षों के बहुत ही सुंदर एवं मनोरम दृश्य थे। कटरा बस स्टैंड से हम लोग एक टैक्सी करके होटल में पहुंचे। आधार शिविर से जय माता दी के जयकारों ने हम सभी के हृदय को भक्तिरस से परिपूर्ण कर दिया था।

माता वैष्णो देवी की यात्रा हर श्रद्धालु के लिए एक अविस्मरणीय और अलौकिक अनुभव है। कटरा के बेस कैंप से शुरू होकर त्रिकूट पर्वत की घुमावदार पगडंडियों, हरी-भरी वादियों और जय माता दी के नारों के बीच 12 किलोमीटर की यह चढ़ाई शारीरिक रूप से भले ही थका देने वाली हो, लेकिन मानसिक रूप से असीम शांति और ऊर्जा प्रदान करती है।

सबसे पहले आरएफआईडी यात्रा पर्ची प्राप्त करना अनिवार्य होता है, जो यात्रा को सुरक्षित और व्यवस्थित रखने में मदद करती है। बाणगंगा चेक पोस्ट से आगे बढ़ते ही भक्तों का उत्साह देखते ही बनता है। कटरा से भवन तक का सफर बाणगंगा से यात्रा का मुख्य मार्ग शुरू होता है। रास्ते में अर्द्धकुंवारी और चरण पादुका जैसे पवित्र स्थल पड़ते हैं। कई श्रद्धालु पैदल चलते हैं, जबकि बुजुर्ग और बच्चे टट्टू, पिट्ठू (एक आदमी जो अपनी पीठ पर छोटे बच्चो या हमारे समान इत्यादि को ले जाने में मदद करता है।), पालकी या बैटरी कार का सहारा लेते हैं।

हम सुबह 4.00 बजे नहा-धोकर चढ़ाई के लिए निकले। यात्रा की शुरुआत बहुत ही उत्साह एवं ऊर्जा से भरी हुई थी। रात के समय जगमगाते रास्तों और ठंडी हवाओं के बीच चढ़ाई करने का अपना ही एक अलग आनंद है।



घाटी में लोगों के घरों और दुकानों की जलती लाइट ऊंचाई से देखने पर ऐसी प्रतीत हो रही थी कि जैसे एक बड़ी सी थाली में बहुत से दिये सजे हुए हों। साथ में चल रहे लोगों की एक टोली सी बन गई थी। थोड़ी-थोड़ी दूर चल कर हम ''जय माता दी'' का उद्घोष कर रहे थे। सुबह पहाडों के बीच में सूर्योदय देखने का अलग ही आनंद था। प्रकृति की छटा देखते ही बनती थी। अब सुबह हो चुकी थी और दुकानें खुल चुकी थी। हमने रास्ते के एक होटल में नास्ता किया और अपनी यात्रा पर आगे बढ़े। रास्ते में यात्रियों की सुविधा के लिए थोड़ी-थोड़ी दूर पर पीने के पानी की व्यवस्था, छोटे-छोटे होटल और शौचालय की व्यवस्था भी थी। विश्राम के लिए भी थोड़ी-थोड़ी दूर पर बेंच बनी हुई थी, जिस पर भक्तगण कुछ देर बैठकर अपनी थकान मिटाते और फिर ''जय माता दी'' बोलकर आगे बढ़ जाते। अब हम लोगों पर थकान हावी होने लगी थी और हम हर लौटने वालों से यह पूंछ रहे थे कि 'अभी मंदिर कितना दूर है?', और लौटने वाला प्रत्येक व्यक्ति मुस्कुरा कर बस यही उत्तर देता कि, ''बस थोड़ा सा और दूर है''। शाम ढल चुकी थी और अब मंदिर से घंटियो कि आवाज दूर से ही सुनाई देने लगी थी।

त्रिकूट पर्वत की चोटी पर स्थित मुख्य भवन तक पहुँचने के बाद, माता के दर्शन के लिए लंबी कतारों में लगना पड़ता है। हमें रात्रि 9.00 बजे माता के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमने पवित्र गुफा में प्रवेश किए और ठंडे-ठंडे झरने के पानी से गुजर कर माँ के प्राकृतिक पिण्ड रूपों महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के दर्शन किए। उनके दर्शन करने मात्र से रास्ते की सारी थकान पल भर में गायब हो जाती है। दर्शन के बाद मन में केवल एक ही भाव रहता है - ''जय माता दी'', मानो माता ने स्वयं अपने दरबार में बुलाया हो।

वैष्णो देवी की संपूर्ण यात्रा तभी पूर्ण मानी जाती है, जब श्रद्धालु भवन से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित भैरवनाथ मंदिर के दर्शन करते हैं। मान्यता है कि माता ने भैरव बाबा को क्षमादान देकर यह वरदान दिया था कि उनके दर्शन के बिना वैष्णो देवी की यात्रा अधूरी मानी जाएगी।

भैरवबाबा की चढ़ाई और भी दुर्गम थी। लोगों की ऐसी मान्यता है कि रात्रि में शेर माता के दर्शन करने आता है, इसलिए हमने जल्दी-जल्दी चढ़ाई की और भैरवबाबा के दर्शन किए। शेर तो नहीं, हम लोगों को बंदरों के दर्शन जरूर हो गए। जब हम भैरव घाटी से कटरा की ओर वापस लौटे, तो आँखों में माता के दर्शन की अद्भुत छवि और मन में एक नई ऊर्जा थी। यह यात्रा सिर्फ एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि आस्था, धैर्य और प्रकृति की गोद में बिताया गया एक ऐसा समय था जो जीवन भर याद रहता है।

अगली सुबह हम अपने होटल में वापस आए और खाना खा-पीकर आराम करने लगे। दोपहर में हम लोगों ने लोकल बाज़ार घूमा और बादाम, अखरोट और केसर खरीदा। फिर हम कटरा से जम्मू ट्रेन पकड़ने के लिए निकल पड़े। रात में स्टेशन के बाहर हमने होटल में बहुत ही



स्वादिष्ट राजमा-चावल खाया और फिर अपनी ट्रेन में बैठ गए। ट्रेन लोगों से खचाखच भरी हुई थी। एक सेब के व्यापारी ने तो अपने सेब के बहुत सारे बक्से ट्रेन के दरवाजे पर ही रख दिये थे, जिससे आने-जाने वालों को बहुत परेशानी हो रही थी। हम लोग चढ़ाई की वजह से बहुत ही थके हुए थे इसलिए हम अपनी सीटों पर लेटते ही सो गए। सुबह शोरगुल सुनकर हम सभी की आँखें खुली, तो पता चला कि ट्रेन में चोरी हो गई है। पिताजी ने तुरंत अपना सामान चेक किया तो पता चला कि हमारा सारा सामान चोरी हो गया है। यहां तक कि हम लोगों के पास के जूते-चप्पल भी चोरी हो चुके थे। तब पिताजी ने बताया कि हम लोगों के पास पैसे तक नहीं है, क्योंकि उन्होंने अपना पर्स भी सामान के साथ रख दिया था। यहाँ तक कि छोटी बहन की दूध की बोतल भी चोरी हो गयी थी और वह भूख से दहाड़े मारकर रो रही थी। सामने की सीट पर बैठी एक मुस्लिम महिला जो अपने छोटे बच्चे को लेकर सफर कर रही थी, उन्होंने एक दूध से भरी बोतल मेरी माताजी को दी। उन्होंने बताया कि उनके पास दो बोतलें थी और वो अगले स्टेशन पर उतरने वाली हैं। माताजी की आखों मे आँसू भर आए, उन्होंने मुस्कुरा कर उनका धन्यवाद दिया और छोटी बहिन को दूध पिलाया। सेब के व्यापरी ने अपने सेब के बक्से से कुछ सेब निकालकर मुझे खाने के लिए दिये। मैंने उन्हे धन्यवाद दिया। इतना प्रेम और सौहार्द देखकर हम सभी की आंखें भर आयीं।

यह घटना जब घटी तब मेरी आयु केवल 5 वर्ष की थी और मुझे एक बहुत बड़ी सीख मिली, कि दूसरों की मदद करने से पहले हमें उनकी आर्थिक स्थिति, जाति या धर्म नहीं देखना चाहिए। मेरी यह यात्रा केवल भक्तिभाव से ही नहीं भरी थी अपितु इस यात्रा ने मेरे हदय को प्रेम,सौहार्द और सभी धर्मो के प्रति आदर और सम्मान से भर दिया था।

जय माँ वैष्णो देवी

❑❑❑

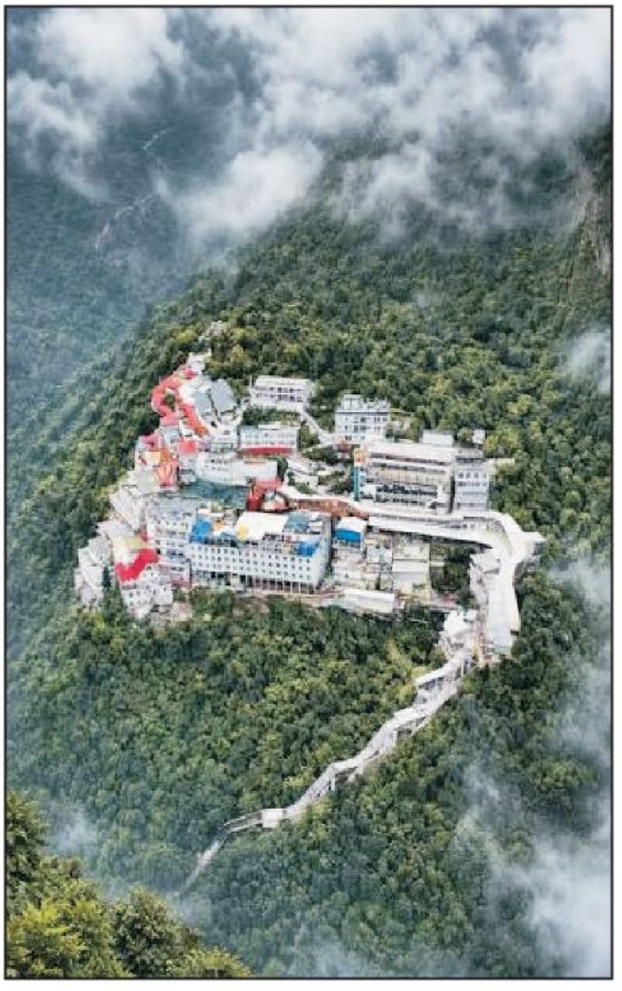





सबमरीन म्यूज़ियम

श्रीमती नीना वर्मा
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

आजकल जब भी मैं कहीं घूमने का प्लान बनाती हूँ, तो उस जगह के बारे में गूगल पर सर्च करती हूँ और घूमने लायक सबसे अच्छी जगहों का पता लगाने की कोशिश करती हूँ। इस बार हमने विशाखापत्तनम जाने का प्लान बनाया था। वहाँ घूमने के लिए कई खूबसूरत जगहें थीं, लेकिन जिस जगह ने मुझे सबसे ज़्यादा आकर्षित किया, वह थी सबमरीन म्यूज़ियम!! बचपन से ही मुझे सबमरीन में दिलचस्पी रही है। मैं हमेशा सोचती थी कि लोग इसके अंदर कैसे रहते हैं, यह कैसे काम करती है, और समुद्र के नीचे रहकर यह कैसे देश की रक्षा करती है और दुश्मनों पर हमला भी करती है। इसलिए, सबमरीन म्यूज़ियम जाने से मुझे अपने सभी सवालों के जवाब मिलने वाले थे और मेरी उत्सुकता भी कुछ हद तक शांत होने वाली थी। अच्छी बात यह रही कि हमारे विशाखापत्तनम टूर की शुरुआत सबमरीन म्यूज़ियम देखने से ही हुई, हालाँकि हमारी ट्रेन लगभग पाँच घंटे लेट थी।

वहाँ वह अपनी पूरी शान-ओ-शौकत के साथ खड़ी थी - 'आईएनएस कुरुसुरा', मेरी कहानी की हीरोइन; वह सबमरीन!!

यह पूरे दक्षिण एशिया में अपनी तरह की पहली सबमरीन थी। आईएनएस कुरुसुरा सबमरीन सोवियत संघ में बनी ख-641 क्लास की सबमरीन थी, जिसे 18 दिसंबर 1969 को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था और देश की 31 साल की शानदार सेवा के बाद 28 फरवरी 2001 को इसे सेवा से हटा दिया गया। हथियारों के साथ पूरी सबमरीन को समुद्र से ज़मीन पर लाया गया और विशाखापत्तनम के रामकृष्ण बीच रोड पर कंक्रीट के बेस पर स्थापित किया गया। सबमरीन की लंबाई 91.3 मीटर और चौड़ाई 8.00 मीटर है। हमें सबमरीन के अंदर जाने के लिए लोहे की सीढ़ियों का इस्तेमाल करना पड़ता है, जिन्हें शायद सबमरीन को कंक्रीट प्लेटफॉर्म पर फिक्स करने के बाद बनाया गया था। इसके बाद हम सबमरीन के अंदर घूम सकते हैं, जहाँ एसी चल रहे हैं, और देख सकते हैं कि नाविक इतनी छोटी-सी जगह में कैसे रहते थे। 'आईएनएस कुरुसुरा' सच्चे नागरिकों के मन में त्याग और देशभक्ति की भावना जगाती है। यह म्यूज़ियम न केवल सबमरीन के पुराने इतिहास को दिखाता है, बल्कि हमें उन योद्धाओं की मुश्किलों से भी अवगत कराता है जो इसका हिस्सा रहे हैं। नाविकों के आराम करने या सोने की जगह (बंकर), छोटे टॉयलेट और तंग जगहों को देखकर हमारे मन में उनके लिए सम्मान और आश्चर्य का भाव जागता है।



सबमरीन के अंदर के सभी जटिल मैकेनिकल पार्ट्स, वायरिंग और अलग-अलग तरह के इंस्ट्रूमेंट्स को देखकर हैरानी होती है कि इसे कैसे बनाया गया होगा। उन लोगों की काबिलियत देखकर सम्मान महसूस होता है जिन्होंने लगभग 55 साल पहले, बिना कंप्यूटर और एडवांस्ड टेक्नोलॉजी के ऐसी मशीनरी बनाई थी। मैं इस अनोखी पहल के लिए आंध्र प्रदेश सरकार की सच में शुक्रगुजार हूँ। सबमरीन म्यूज़ियम आम लोगों को सबमरीन और उसके क्रू के काम के बारे में जागरूक करने का एक ज़रिया है। सबमरीन में पर्यटकों को देखने के बाद मेरे मन में बस एक ही चिंता थी कि क्या ये लोग सच में उन मुश्किलों को समझते हैं जिनका सामना नाविक करते हैं, और क्या म्यूज़ियम देखने आने वाले बच्चे नेवी या सबमरीन क्रू में शामिल होने के लिए प्रेरित होंगे, या फिर यह जगह सभी आने वालों के लिए सिर्फ़ सेल्फी लेने की जगह बनकर रह जाएगी।

❑❑❑





यात्रा

श्री संदीप बुटोलिया
लेखापरीक्षक

जीवन एक यात्रा है,
जन्म से लेकर मृत्यु तक हर इंसान,
इस यात्रा पर निकलता है।
यात्राओं की जगह हर एक की,
अलग-अलग होती है।

किसी की यात्रा बहुत सुखद होती है,
तो किसी की बहुत कठिन,
पर यात्री अपनी मंजिल पाने चले चलता है,
लेकर मन में दृढ़ संकल्प यकीन।

वीर शहीद निकले अपने देश की यात्रा पे,
करने देश आजाद
योगी संत महात्मा निकले,
लोगों को ज्ञान से प्रबुद्ध करने।

शांति का मार्ग दिखलाने,
किसान निकले अन्न उगाने,
धरती का हर जीव भी यात्रा कर रहा है,
यात्रा का उद्देश्य है मन की मुराद पाना।

जब तक सांस और आस है बाकी,
ये यात्रा होती रहेगी,
और,
जिस दिन आस और सांस नहीं बचेगी उस दिन,
वह जीवन की अंतिम यात्रा होगी।

सफल सुखद जीवन यात्रा के लिए,
षडरिपुओं को त्यागना जरूरी है,
जीवन यात्रा का अंतिम दिन है,
मृत्यु।

❑❑❑





मानसून की हरियाली के बीच मुनार - प्रकृति की गोद में बिताए अविस्मरणीय पल

सुश्री भूमिका प्रसाद
लिपिक

प्रकृति जब अपनी सम्पूर्ण छटा बिखेरती है, तब कुछ स्थान केवल पर्यटन स्थल नहीं रह जाते, बल्कि जीवनभर संजोकर रखने वाली स्मृतियाँ बन जाते हैं। ऐसी ही एक अविस्मरणीय यात्रा का अवसर मुझे अगस्त माह के अंतिम सप्ताह में अपने परिवार के साथ केरल के प्रसिद्ध पर्वतीय पर्यटन स्थल मुनार की यात्रा करने का मिला। नागपुर से हमने विमान द्वारा कोच्चि की यात्रा की और वहाँ से घुमावदार पर्वतीय मार्गों से होते हुए लगभग चार घंटे में मुनार पहुँचे। जैसे-जैसे हमारी गाड़ी ऊँचाइयों की ओर बढ़ती गई, वैसे-वैसे बादलों से ढकी पहाड़ियाँ, दूर-दूर तक फैले चाय के बागान, मसालों की हल्की सुगंध, झरनों का कलकल संगीत और वर्षा से धुली हरियाली मन को एक अलग ही दुनिया में ले गई। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रकृति ने स्वयं अपने सबसे सुंदर रंगों से इस भूमि को सजाया हो। अगस्त का समय मुनार घूमने के लिए अत्यंत उपयुक्त लगा, क्योंकि मानसून के बाद पूरा क्षेत्र ताज़गी, हरियाली और निर्मल वातावरण से भर उठता है।

हमारी यात्रा का पहला रोमांचक अनुभव मंकुलम बाँस बोट राइड था। बाँस से बनी पारंपरिक नाव में शांत जलधारा पर तैरते हुए चारों ओर घने जंगलों और पक्षियों की मधुर चहचहाहट ने मन को अद्भुत शांति प्रदान की। स्थानीय नाविकों ने बताया कि यह क्षेत्र जैव-विविधता से समृद्ध है और यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता को संरक्षित रखने के लिए विशेष प्रयास किए जाते हैं। आधुनिक जीवन की भागदौड़ से दूर प्रकृति के सान्निध्य में कुछ पल बिताने का अवसर मिला, जिसने मन को अद्भुत शांति और सुकून से भर दिया।

इसके बाद हमने मुनार की सबसे लंबी ज़िप लाइन का रोमांच अनुभव किया। ऊँचाई से हरियाली के अथाह विस्तार को देखते हुए तेज़ गति से हवा को चीरते हुए आगे बढ़ना रोमांच और उत्साह से भर देने वाला अनुभव था। कुछ ही क्षणों में ऐसा लगा मानो मैं पक्षियों की तरह पर्वतों के ऊपर उड़ रहा हूँ। यह रोमांचकारी अनुभव मुझे अत्यंत पसंद आया और जीवनभर याद रहने वाली स्मृतियों में शामिल हो गया।

अगली सुबह हम प्रातःकाल लगभग तीन बजे विश्व के सबसे ऊँचे चाय बागानों में से एक कोलुक्कुमलाई के लिए रवाना हुए। ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्तों से गुजरकर जब हम शिखर पर पहुँचे, तब पूर्व दिशा में धीरे-धीरे उगते सूर्य ने बादलों के समुद्र को सुनहरे रंगों से भर दिया। वह दृश्य शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। चारों ओर फैले चाय के बागान, ठंडी हवा और बादलों के बीच से झाँकती सूर्य की किरणें मानो प्रकृति का दिव्य चित्र प्रस्तुत कर रही थीं। यहीं पर पारंपरिक विधि से तैयार की जाने वाली चाय का स्वाद लेना भी अपने आप में विशेष अनुभव था।

मुनार केवल प्राकृतिक सौंदर्य ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत के लिए भी प्रसिद्ध है। इसका अनुभव हमें कलारी क्षेत्र में हुआ, जहाँ



केरल की प्राचीन युद्धकला कलरिपयट्टु का सजीव प्रदर्शन देखने का अवसर मिला। कलाकारों की फुर्ती, अनुशासन, तलवार, भाले और अग्नि के साथ किया गया प्रदर्शन यह बताता है कि यह केवल युद्धकला नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन की अद्भुत परंपरा है।

मुनार की यात्रा झरनों के बिना अधूरी है। मार्ग में अनेक छोटे-बड़े झरने दिखाई देते हैं, जो वर्षा ऋतु के बाद अपने पूरे वेग में बहते हैं। विशेष रूप से अट्टुकड और लक्कम जलप्रपात ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। अट्टुकड झरना घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच स्थित है, जहाँ गिरते जल की गर्जना और चारों ओर फैली हरियाली मन को मंत्रमुग्ध कर देती है। वहीं लक्कम जलप्रपात अपेक्षाकृत शांत और पारिवारिक भ्रमण के लिए उपयुक्त स्थान है। ठंडे, स्वच्छ जल में कुछ समय बिताने का अनुभव अत्यंत स्फूर्तिदायक रहा।

इसके बाद हम इको पॉइंट पहुँचे। यहाँ पहाड़ियों से टकराकर लौटती अपनी ही आवाज़ सुनना बचपन की यादों को ताज़ा कर देता है। चारों ओर फैली झील, धुंध से ढके पर्वत और ठंडी हवा इस स्थान को और भी आकर्षक बनाते हैं। निकट स्थित मट्टुपेट्टी बाँध का शांत जलाशय, उसके किनारे की हरियाली और नौकायन का अनुभव मन को लंबे समय तक याद रहने वाला रहा। यहाँ जल संरक्षण और जलविद्युत परियोजनाओं के महत्व की जानकारी भी मिली।

वन्यजीवन से मेरा विशेष लगाव रहा है, इसलिए एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा सबसे यादगार अनुभवों में से एक रही। यह उद्यान संकटग्रस्त नीलगिरि तहर का प्राकृतिक आवास है। यहाँ की घास से ढकी पर्वतीय ढलानें, दुर्लभ वनस्पतियाँ और स्वच्छ वातावरण प्रकृति संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। प्रत्येक बारह वर्ष में खिलने वाला नीलकुरिंजी पुष्प भी इसी क्षेत्र की विशेष पहचान है, जो पूरे पर्वत को नीले रंग से आच्छादित कर देता है। यद्यपि मुझे इसे खिलते हुए देखने का अवसर नहीं मिला, फिर भी इसके बारे में जानकर प्रकृति की अद्भुत विविधता का एहसास हुआ।

कुंडला झील में बोटिंग करते समय शांत जल में आसपास की पहाड़ियों और बादलों का प्रतिबिंब किसी चित्रकार की उत्कृष्ट कृति जैसा प्रतीत हो रहा था। वहीं पोथामेडु व्यू पॉइंट से दिखाई देने वाले चाय, कॉफी और इलायची के विशाल बागानों का मनोरम दृश्य मुनार की वास्तविक पहचान है। यहाँ खड़े होकर ऐसा लगा मानो धरती ने स्वयं हरे रंग की अनंत चादर ओढ़ ली हो।

हम अनाकुलम भी गए, जिसे हाथियों का गाँव कहा जाता है। यहाँ जंगली हाथियों को प्राकृतिक वातावरण में विचरण करते देखना अत्यंत रोमांचकारी अनुभव था। स्थानीय लोगों ने बताया कि हाथी अक्सर यहाँ की जलधाराओं में पानी पीने और स्नान करने आते हैं तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच वर्षों से एक संतुलित सह-अस्तित्व बना हुआ है।

मुनार के इतिहास को समझने के लिए टी म्यूज़ियम की यात्रा अत्यंत उपयोगी रही। यहाँ ब्रिटिश काल से लेकर आधुनिक समय तक चाय उद्योग के विकास, चाय की पत्तियों के प्रसंस्करण और विभिन्न प्रकार की चाय बनाने की पूरी प्रक्रिया को विस्तार से प्रदर्शित किया



गया है। ताज़ी बनी मुनार की चाय की सुगंध और स्वाद ने इस अनुभव को और भी यादगार बना दिया।

हमने येल्लापट्टी, वट्टावडा, साइलेंट वैली, चोक्रमुडी पीक, गैप रोड और कन्नन देवन क्षेत्र का भी भ्रमण किया। येल्लापट्टी और गैप रोड के घुमावदार रास्ते तथा बादलों से ढकी घाटियाँ हर मोड़ पर नए दृश्य प्रस्तुत करती हैं। वट्टावडा अपने स्ट्रॉबेरी, संतरे और सब्जियों की खेती के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ का ग्रामीण जीवन अत्यंत शांत और आत्मीय लगा। चोक्रमुडी पीक से दिखाई देने वाला पश्चिमी घाट का विस्तृत दृश्य मन को विस्मित कर देता है। सायंकाल कन्नन देवन के चाय बागानों में डूबते सूर्य की सुनहरी किरणें जब हरी-भरी ढलानों पर बिखरती हैं, तब पूरा वातावरण किसी चलचित्र के दृश्य जैसा प्रतीत होता है। उस क्षण ऐसा लगा मानो समय कुछ पल के लिए ठहर गया हो।

मुनार की यात्रा केवल प्राकृतिक सौंदर्य तक सीमित नहीं रही, बल्कि यहाँ का पारंपरिक भोजन भी मेरे लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बना। नाश्ते में परोसा गया पुट्टु और कडला करी सादगी और पौष्टिकता का अद्भुत संगम है। केले के पत्ते में मसालों के साथ लपेटकर धीमी आँच पर पकाई गई करिमीन पोल्लिचाथु (पर्ल स्पॉट मछली) का स्वाद लंबे समय तक स्मरण रहेगा। पारंपरिक केरल सद्या का अनुभव तो अविस्मरणीय रहा, जिसमें केले के पत्ते पर लगभग बीस से अधिक व्यंजन--- सांभर, रसम, अवियल, थोरन, ओलन, कूटू करी, पचड़ी, इंची करी, अचार, पापड़, केले के चिप्स और विभिन्न प्रकार की चटनियों के साथ परोसे जाते हैं। एक ही भोजन में इतने विविध स्वादों का संतुलन वास्तव में केरल की समृद्ध पाक परंपरा का परिचायक है। मलाबार परोट्टा, तथा शाम की चाय के साथ परोसा गया गर्मागर्म पझम पोरी (केले के पकौड़े) स्थानीय भोजन संस्कृति की विशिष्ट पहचान हैं।

मिठाइयों में पायसम की मृदुल मिठास, गुड़ और चावल से बने अडा प्रदामन का समृद्ध स्वाद, घी में तले हुए उन्नियप्पम की सुगंध तथा परतदार चट्टी पथिरी ने भोजन को यादगार बना दिया। इन व्यंजनों में नारियल, गुड़, चावल और पारंपरिक मसालों का संतुलित उपयोग केरल की पाक विरासत को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

मुनार से लौटते समय मेरे साथ केवल कैमरे में कैद कुछ सुंदर चित्र ही नहीं थे, बल्कि प्रकृति के प्रति नया सम्मान, स्थानीय संस्कृति के प्रति गहरा अपनापन और परिवार के साथ बिताए अनमोल क्षणों की अनगिनत स्मृतियाँ भी थीं। यह यात्रा मेरे लिए केवल एक अवकाश नहीं, बल्कि जीवन की भागदौड़ के बीच स्वयं को प्रकृति के निकट अनुभव करने का अवसर थी। यदि भारत में किसी ऐसे स्थान का नाम लिया जाए जहाँ हरियाली, पर्वत, बादल, वन्यजीवन, रोमांच, संस्कृति और पारंपरिक भोजन एक साथ मिलकर किसी यात्री को संपूर्ण अनुभव प्रदान करते हों, तो निस्संदेह मुनार उनमें सर्वोच्च स्थान रखता है। आज भी जब उस यात्रा को स्मरण करती हूँ, तो चाय की पत्तियों की भीनी सुगंध, झरनों का मधुर संगीत और बादलों से ढकी पर्वत श्रृंखलाएँ मेरे मन को उसी आनंद से भर देती हैं, जैसा मैंने वहाँ प्रत्यक्ष अनुभव किया था।

❑❑❑



प्रशासनिक शब्दावली

Account	लेखा/खाता	Endorsement	पृष्ठांकन
Actuary	बीमांकक	Errata	शुद्धिपत्र
Adjournment	स्थगन	Finance	वीत्त
Advice	सलाह	Forfeiture	जब्ती
At-par	सममूल्य पर	File	मिसिल
Agenda	कार्यसूची	Goodwill	सदिच्छा/सद्भावना
Allotment	आबंटन	Indemnity Bond	क्षतिपूर्ति बंध पत्र
Approval	अनुमोदन	Input	नीविष्टि/निवेश
Article	अनुच्छेद	Issuing banker	प्रचालक बैंकर
Association	संघ/साहचर्य	Lending Rate	उधारदेय दर
Authentic	प्रामाणिक	Letter of Credit	साखपत्र
Authority	प्राधिकरण	Liquidation	परिसमापन
Bad debt	अशोध्य ऋण	Management	प्रबंधन
Bearer	वाहक/धारक	Memorandum	ज्ञापन
Book Credit	खाता-उधार	Mobilisation	जुटाव
Bureaucracy	नौकरशाही	Monetary Area	मुद्रा-क्षेत्र
Bye-Law	उपविधी	Moratorium	भुगतान स्थगन
Cast/Cost/Caste	कलाकार-भूमिका लागत/जाति	Nomination	नामांकन
		Operating Profit	प्रचालन व्यय
Client	ग्राहक	Order not to pay	भुगतान की आज्ञा नहीं
Circular	परिपत्र	Out of Stock	स्टॉक में नहीं
Consent	सहमति	Outgo	खर्च
Contract	संविदा, ठेका	Over Certification	अतिप्रमाणन
Credit Control	ऋण द्रव्य-नियंत्रण	Panel	नामिका
Current Account	चालू खाता	Pawn / Pledge	गिरवी
Debtor	देनदार, ऋणी	Postponement	स्थगन
Discretion	विवेक	Progressive stock-taking	क्रमिक माल-जाँच
Dispatcher	डाक-प्रेषक/प्रेषक	Promissory Note	रुक्का-हुण्डी
Documentation	प्रलेखन	Realization	वसूली
Dramatize	नाटकीय बनाना	Reclamation	संशोधनार्थ प्रपत्र
Due from Banks	बैंकों से प्राप्य	Reconciliation of Account	लेखा-समापन
Earning	अर्जन	Record	अभिलेख
Echo	अनुगूँज	Retirement	सेवानिवृत्त
Enclosure	अनुलग्नक	Stabilization	स्थिरीकरण

❐❐❐



कार्यालयीन हिंदी के वाक्य साँचे

- This performance Audit was conducted to assess the implementation of the scheme.
  यह निष्पादन लेखापरीक्षा योजना के क्रियान्वयन का आंकलन करने के लिए की गई।
- This Report has been prepared for submission to the President of India.
  यह प्रतिवेदन भारत के राष्ट्रपति को प्रस्तुत करने के लिए तैयार किया गया है।
- The Report contains significant result of the Compliance audit of the Ministry.
  इस प्रतिवेदन में मंत्रालय की अनुपालन लेखापरीक्षा के महत्वपूर्ण परिणाम निहित है।
- The Comptroller and Auditor General of India conducts the audit of receipts of the Union Government.
  भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक संघ सरकार की प्राप्तियों की लेखापरीक्षा करते है।
- Ministry has initiated action in respect of cases pointed out by Audit.
- मंत्रालय ने लेखापरीक्षा द्वारा बताए गए मामलों के संबंध में कार्रवाई आरंभ की है।
- The accounts of Government Companies are audited by C&AG of India.
  सरकारी कम्पनियो के लेखाओं की लेखापरीक्षा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा की जाती है।
- Audit findings are discussed in the succeeding paragraphs.
  लेखापरीक्षा निष्कर्षो की चर्चा आगामी पैराग्राफों में की गई है।
- A performance Audit was undertaken to assess the efficiency of the Department.
  विभाग की दक्षता का निर्धारण करने के लिए निष्पादन लेखापरीक्षा की गई थी।
- The test check by the Author has been carried out to the required percentage.
  लेखापरीक्षक के द्वारा नमूना जाँच अपेक्षित प्रतिशत तक की गई है।
- Audit is done in accordance with the prescribed norms and adequate procedure.
  लेखापरीक्षा निर्धारित मानकों और पर्याप्त प्रक्रिया के अनुसार की गई है।
- The paragraphs included in this report relate to the Ministries/Departments of Government of India.
  इस प्रतिवेदन में सम्मिलित पैराग्राफ भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों से संबंधित है।
- The Ministry accepted audit observation and has initiated action in most cases.
  मंत्रालय ने लेखापरीक्षा आपत्ति स्वीकार कर ली और अधिकतर मामलों में कार्यवाही आरंभ की है।
- The department stated that the matter has been taken up with the higher authorities.
  विभाग ने कहा कि मामले को उच्च प्राधिकारियों के समक्ष लाया गया है।
- The matter was brought to the notice of the department
  मामलों को विभाग के संज्ञान में लाया गया था।
- Audit noticed deficiencies in internal control mechanism of revenue management.
  लेखापरीक्षा ने राजस्व प्रबंधन के आन्तरिक नियंत्रण तंत्र में कमियों को देखा।
- Department has submitted an action plan to the concerned ministry.
  विभाग ने संबंधित मंत्रालय को एक कार्ययोजना प्रस्तुत की।
- Data not made available by the State Government
  राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध नहीं कराए गए आंकड़े।
- Please treat this strictly as confidential.
  कृपया इसे पूरी तरह गोपनीय समझा जाए।
- Draft reply on the lines suggested above may be put up
  उपयुक्त सुझावों के आधार पर उत्तर का मसौदा पेश करें।

❐❐❐



उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का दौरा

दिनांक 7 जुलाई 2026 को उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (डी.ए.आई) सुश्री गीताली तारे, (आई.ए.ए.एस.) एवं महानिदेशक श्री संदीप लाल (आई.ए.ए.एस.) द्वारा कार्यालय का दौरा किया गया। इस अवसर पर उनके द्वारा पौधारोपण भी किया गया।









स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ

कार्यालय में 80वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी की गई।









विद्यार्थियों का सत्कार समारोह



कार्यालय में पदस्थ पदाधिकारियों के बच्चों को शैक्षणिक सत्र 2025-26 के 10 वीं एवं 12 वीं की बोर्ड परीक्षाओं में अव्वल अंकों से उत्तीर्ण होने पर महालेखाकार महोदय द्वारा सम्मनित किया गया।

स्वास्थ्य शिविर

कार्यालय के तत्त्वावधान में एच.सी.जी कैंसर हॉस्पिटल, नागपुर द्वारा दिनांक 20 अगस्त, 2026 को निःशुल्क कैंसर स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत निःशुल्क जाँच सेवाएँ प्रदान की गईं और कैंसर के प्रति कार्मिकों में जागरूकता फैलाने हेतु सर्वाइकल एवं ब्रेस्ट कैंसर विषय पर वक्तव्य का आयोजन किया गया।





भारत भ्रमण सुडोकू पहेली - उत्तरकुंजी

ज	वा	ले	वै	अ	ऋ	उ	गो	क
उ	गो	ऋ	वा	क	ज	वै	अ	ले
वै	क	अ	ले	उ	गो	वा	ऋ	ज
वा	ज	वै	क	ऋ	अ	ले	उ	गो
ले	अ	गो	उ	ज	वा	क	वै	ऋ
क	ऋ	उ	गो	वै	ले	अ	ज	वा
अ	ले	वा	ज	गो	वै	ऋ	क	उ
ऋ	उ	ज	अ	वा	क	गो	ले	वै
गो	वै	क	ऋ	ले	उ	ज	वा	अ

भारत भ्रमण वर्ग पहेली-उत्तर कुंजी

1 गु	ज	रा	2 त				3 को	ल	4 का	ता
			5 मि	र	ज		टा		न	
	6 भो	पा	ल						7 पु	री
					ब	9 ल	पु	र		
										10 उ
11 गो					शे		न			द
12 वा	पी		13 है		द		ऊ			य
			द		14 पु	न्छ				पु
	15 आ	ग	रा		र		16 ज	य	17 पु	र
	स		बा						ष्क	
18 ध	न	बा	द		19 गो	र	ख	पु	र	



राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक

संघ की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति निरंतर प्रयासरत है। जनवरी-मार्च, 2026 एवं अप्रैल-जून, 2026 तिमाहियों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें सफलतापूर्वक आयोजित की गई। बैठक में कार्यालय के विभिन्न अनुभागों से प्राप्त राजभाषा प्रगति प्रतिवेदनों का मूल्यांकन किया गया तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के सभी लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने पर बल दिया गया।

जनवरी-मार्च, 2026 तिमाही के दौरान सर्वाधिक हिंदी पत्राचार हेतु 'वित्त मुख्यालय-I एवं II अनुभाग' को तथा सर्वाधिक हिंदी टिप्पण हेतु 'प्रशासन अनुभाग' को महालेखाकार महोदय द्वारा 'महालेखाकार चल शील्ड' प्रदान किया गया। अप्रैल-जून, 2026 तिमाही के दौरान सर्वाधिक हिंदी पत्राचार हेतु 'विधि एवं एपीएआर अनुभाग' को एवं सर्वाधिक हिंदी टिप्पण हेतु 'रिपोर्ट-II अनुभाग' को बैठक के अध्यक्ष द्वारा 'महालेखाकार चल शील्ड' प्रदान किया गया।







हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के 'नागपुर विशेषांक' के 40वें अंक का विमोचन





हिंदी कार्यशाला

राजभाषा विभाग के निदेशानुसार, कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन को सरल एवं सहज बनाने हेतु कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। हिंदी कार्यशाला के आयोजन का मुख्य उद्देश्य कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को दैनिक सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए सक्षम व प्रोत्साहित करना होता है।

अप्रैल-जून, 2026 तिमाही के लिए दिनांक 17.06.2026 को 'हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन' तथा *'कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप एवं अभ्यास कार्य'* विषय पर चार सत्रों की एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जुलाई-सितंबर, 2026 तिमाही के लिए दिनांक 01.09.2026 एवं 02.09.2026 को क्रमशः *'राजभाषा नीति एवं अनुवाद टूल्स की उपयोगिता'* तथा *'हिंदी टिप्पणी, मसौदा लेखन एवं हिंदी पारिभाषिक शब्दावली'* विषय पर कुल चार सत्रों की दो अर्धदिवसीय कार्यशालाएँ आयोजित की गई।











हिंदी प्रोत्साहन योजना



सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना 2025-26 के अंतर्गत **प्रथम पुरस्कार** से सम्मानित पदाधिकारी **श्री विभाकर कुमार,** लेखापरीक्षक।

पारंगत प्रशिक्षण

हिंदी शिक्षण योजना, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा संचालित हिंदी पारंगत प्रशिक्षण सत्र जनवरी-मई 2026 में हमारे कार्यालय के आठ कर्मचारी उत्तीर्ण हुए।

हिंदी पारंगत प्रशिक्षण सत्र जनवरी-मई, 2026

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/सुश्री	प्राप्तांक/पूर्णांक	प्रतिशत	
1.	राजेन्द्र रामकृष्ण रेवतकर लिपिक	110/200	55	
2.	निखिल चन्द्रकांत तुमराम लिपिक	148/200	74	
3.	महेन्द्र जोगेश्वर शुक्ला वरिष्ठ लेखापरीक्षक	123/200	61.5	
4.	राजेश ईश्वर बागडे वरिष्ठ लेखापरीक्षक	152/200	76	
5.	सुवर्णा अतुल बडे वरिष्ठ लेखापरीक्षक	153/200	76.5	
6.	वैभव भाष्कर बहल लेखापरीक्षक	153/200	76.5	
7.	अनुराग पाठक आशुलिपिक ग्रेड II	147/200	73.5	
8.	अमीत देशपांडे वरिष्ठ लेखापरीक्षक	153/200	76.5	



हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र		''ख'' क्षेत्र		''ग'' क्षेत्र	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100% 100% 70% 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90% 90% 60% 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र कार्यालय/व्यक्ति	60% 60% 60% 60%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%		100%		100%	
3.	हिंदी में टिप्पण	80%		55%		35%	
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%		65%		35%	
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%		70%		45%	
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%		60%		35%	
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%		100%		100%	
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%		100%		100%	
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, समचार पत्र सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%		50%		50%	
10.	हिंदी और अंग्रजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटश्र भी शामिल है, की खरीद	100%		100%		100%	
11.	वेबसाईट द्विभाषी हो	100%		100%		100%	



12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डो आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयो/विभागो और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे.सं.सं) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/ उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठके (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष मे 2 बैठके वर्ष में 2 बैठके (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठक (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयो/विभागो/कार्यालयो/ बैंको/उपक्रमो के ऐसे अनुभाग जहाँ संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	45%	35% (न्यूनतम अनुभाग)	25%

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहाँ अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, 'क' क्षेत्र में कुल कार्य का 45% 'ख' क्षेत्र में 30% और 'ग' क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए।

❐❐❐



आपके पत्र

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'रश्मि' के 40वें अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। 'दीक्षा भूमि', 'अपनापन' इत्यादि रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी के प्रचार की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा वाणिज्यिक का कार्यालय, बेंगलुरु

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के 40वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। पत्रिका की साज सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं उच्च स्तरीय है। श्रीमती नीरजा टंडन द्वारा लिखित लेख 'नागपुर के रंग-इतिहास परम्परा, प्रगति और पहचान' अत्यंत रोचक हैं। सुश्री नीना वर्मा की रचना 'नागपुर के त्यौहार' श्रेष्ठ संस्कृति और कला का विवरण है; सुश्री प्रियंका कुमारी की रचना 'दीक्षाभूमि' एवं श्री अनुराग पाठक की रचना 'अपनापन' प्रशंसनीय है। शेष रचनाएं भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, मध्य प्रदेश ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के 40वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका 'रश्मि' के 40वें ई-अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'रश्मि' के 40वें ई-अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- नागपुर के त्योहार, नागपुर की कला एवं लोक संस्कृति, नागपुरः एक नजर में, दीक्षाभूमि, नागपुर के कुछ प्रमुख मंदिर, सीताबर्डी किला की सैर, अपनापन तथा नागपुर शहर आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा (II), पश्चिम बंगाल सीजीओ कॉम्प्लेक्स (4) सेक्टर-1 कोलकाता

❐❐❐

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3)

Section 3(3) of the Official Languages Act, 1963

इस धारा के अंतर्गत निम्नलिखित 14 प्रकार के दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाना है ।

1. संकल्प (Resolutions)
2. सामान्य आदेश (General Orders)
3. नियम (Rules)
4. अधिसूचनाएँ (Notifications)
5. प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट (Administrative & Other Reports)
6. प्रेस विज्ञप्तियाँ (Press Communiques)
7. संसद के सदनों के समक्ष रखी जाने वाली रिपोर्ट
   (Report to be laid before the houses of the Parliament)
8. सरकारी दस्तावेज (Government Papers)
9. संविदाएँ (Contracts)
10. करार (Agreements)
11. अनुज्ञप्तियाँ (Licences)
12. अनुज्ञा पत्र (Permits)
13. निविदा सूचना (Tender Notices)
14. निविदा-प्रपत्र (Tender Forms)



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest